UNIVERSAL LIBRARY

OU_182866

UNIVERSAL LIBRARY

OUP—23—4-4-69—5,000.

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H81·6/B21B Accession No. H 2267

Author बनारसी बेढब

Title बेढब की बैठक 1954

This book should be returned on or before the date last marked below.

बेढब की बहक

लेखक
'बेढब' बनारसी

द्वितीय संस्करण] १९५४ [मूल्य दो रुपया

सर्वाधिकार लेखक द्वारा सुरक्षित

प्रमुख विक्रेता
बम्बई बुक डिपो
१६५/१ हरिसन रोड,
कलकत्ता ७

कल्याण दास एंड ब्रदर्स, बड़े महाराज का मंदिर, बनारस—१ द्वारा प्रकाशित तथा आर. एस धवन, कर्मशियल प्रिंटिंग वर्क्स, गायघाट, फोन नं० ७०१ बनारस में मुद्रित।

आमुख

आज सत्रह वर्षों के बाद इस पुस्तक का दूसरा संस्करण निकल रहा है। हिन्दी तब से कहाँ से कहाँ चली गयी, देश दासता की परतंत्रता तोड़ स्वतंत्र हो गया, कविता उससे अधिक स्वतंत्र हो गयी और मैं जीवन के उस भाग की ओर आ गया जो आके फिर नहीं जाता। इसलिये यदि इस पुस्तक में भी उलट-फेर हो जाय तो चकराने की बात नहीं है।

उर्दू को लोग हिंदी की शैली मात्र मानते हैं। उसके लिये जो भाषाओं के फेर में नहीं पड़ता क्योंकि वह न उर्दू जानता है न हिंदी, इसका कुछ महत्व नहीं है। इसलिये भाषा की बाल की खाल खींचना मेरी शक्ति के बाहर है। 'बहक' की भाषा ही क्या। जो तरंग में आया लिख दिया। पहले संस्करण की भूमिका में मैंने लिखा था—'मैं तो उर्दू को कोई स्वतंत्र भाषा नहीं मानता। हिंदी में फारसी के शब्दों की बहुतायत को मुसलमानों ने उर्दू कह दिया, प्रसन्नता की बात है सत्रह साल के बाद विद्वानों ने भी इसका समर्थन किया।

मैं कवि नहीं हूँ न कविता करने की क्षमता है। अपनी मौज में कुछ लिख दिया है वही 'बहक' है। इसके प्रकाशन का अभिप्राय मनोरंजन है। मानसिक परिश्रम के पश्चात अथवा मन बहलाने के लिये मनोरंजन की आवश्यकता है। जीवन की शुष्कता को हटाने के लिये और हृदय को नीरसता से बचाने के लिये सरल और सीधी-

सादी भाषा में विनोद होना आवश्यक है। हमारे यहाँ जब जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में रोना ही है जहाँ साहित्य में सदा रुदन है, कविता में सदैव वेदना है, बात-बात में आँसू की बूंदें हैं, पग पगपर कलेजा थामने की आवश्यकता पड़ती है, तब ऐसे घटाटोप में हास्य की बिजली कभी-कभी कौंध जाय तो बेजा न होगा।

साहित्य कुछ-न कुछ समय की पगडंडी पर चलता ही है। आज से बीसों वर्ष पहिले जो सामाजिक या राजनीतिक व्यंग किये गये थे वह असामयिक हो गये। उन्हें कहीं-कहीं तो बदला गया, कहीं कहीं ज्यों का त्यों है। उससे कुछ उस समय का आभास मिलता है।

गजल छंद चलता हुआ छंद है। आज के अनेक कवि इसे अपनाने लगे हैं। बहुत सी गजलें प्रायः सब पिंगल के अनुसार हिंदी की विधाता, गीतिका, बिहारी, ग्रंथि, सुमेरु त्रिभंगी दिग्पाल, यशोदा छंद है। इसलिये गजल नाम से भड़कने की आवश्यकता नहीं है। हलकी वस्तु का वाहन भी हलका होना चाहिये। सुगंधि के लिये कोमल-मलय समीर ही अपेक्षित है, आंधी नहीं।

पहिले संस्करण में जो हिंदी छंदों की ये रचना न थी वह इस संस्करण से निकाल दी गयी हैं। इधर जो गजलें लिखी गयी वह इसमें रख दी गयी हैं। इसमें सब गजलें और रुबाइयाँ हैं।

आशा है यह 'प्रेम लपेटे अटपटे' बैन लोगों को प्रिय लगेंगे।

वैशाख पूर्णिमा
२०११

बेढब बनारसी

सूचीक्रम

१	रेगुलर रहो	१
२	धोती को पतलून के अन्दर	२
३	दुकान गंगा रामकी	४
४	कालर से गले को घोटकर	६
५	हजूर का आसरा	७
६	मुसलमाँ होंगे	९
७	रामदाना	१०
८	डिगरियों का बडल	११
९	सिल्ली पर उस्तरा	१२
१०	जबाँ को सँभाल के	१४
११	आतंक निग्रह पिल	१६
१२	नमस्ते-बन्दगी	१७
१३	डारविन की थियोरी	१८
१४	बेढबसे पाला	२०
१५	नमकका डिपो	२१
१६	मोटर कारकी चोट	२३
१७	पत्थर की सिल	२५

१८ दिलका सेल २७
१९ सीनेका दर्द २८
२० खाली ३०
२१ आज बुद्धू भी कलक्टर हो गये ३१
२२ हैजलिन लगाते हैं ३३
२३ सरविसका डर ३५
२४ टीचरी ३६
२५ कर्म ३८
२६ बे भंग की ठंडाई ३९
२७ अजीब फूल ४०
२८ अखरोट का फ्रूट ४१
२९ ट्रंकके आगे पिटारा ४३
३० डायर के चाचा ४५
३१ खुला जंपर ४७
३२ पश्चिमकी हवा ४८
३३ मंकी ग्लैंड ५०
३४ कोर्टशिप-गगनमें ५१
३५ सोया बीन ५२
३६ बेकार जहाज हवाई है ५३
३७ मलाई है ५५

३८ वाटरफाल ५६
३९ उँटोंका राष्ट्रगान ५७
४० विश्वके विषय ५८
४१ सरकार हूँ मैं ५९
४२ कैरम की गोटी ६१
४३ बिठाये बैठे हैं ६२
४४ पतलून पहनता हूँ मैं ६३
४५ हमें आजाद मत करना ६५
४६ शैर अकबर ६६
४७ काशी में ६७
४८ बनविलाव से ६८
४९ कमाने लगा हूँ मैं ६९
५० हूर यहीं है ७०
५१ सूई लगा रहा है ७१
५२ बात बनाते ७२
५३ मुहब्बत की निशानी ७३
५४ तिकड़म ७४
५५ खैराती ७५
५६ मिनिस्टरके साथ ७६
५७ चषकपर चषक ७७

५८	नालीकी	७८
५९	सावनके महीने में	७९
६०	चाल बेढब	८०
६१	मरहम है	८२
६२	तन्दूर से	८४
६३	पूस आता है	८५
६४	कुआँर में	८६
६५	शमाके साथ परवाने	८७
६६	इज्जत बढ़ा दी	८८
६७	प्रेम में टी० बी०	८९
६८	निशानी नहीं है	९०
६९	साहित्य सेवा	९२
७०	शरबते दीदार	९३
७१	सितम	९४
७२	चौपदे	९७

रेगुलर रहो

खुदा महफ़ूज रखे अहले-दिलको इस जमानेमें,
बनायी जा रही है आशिकोंकी लिस्ट थानेमें।

अजब अंदाज बिगड़े मिस्टरोंके इस जमाने में,
बचा कुछ वक्त कालेज से तो वह गुजरा जनानेमें।

'बिज़ी' हैं आज कल बीबीको हम टेनिस खेलानेमें,
लगा है ध्यान सारा लवका सेट उनको जितानेमें।

कहीं भरती न कर लें फौजमें देखो सभंल जाओ,
बड़े चालाक हो नजरोंसे तुम खंजर चलानेमें।

अगर कालेजमें यह ट्रेनिंगभी दे देते तो अच्छा था,
कि क्या क्या दिक्कतें पड़ती है मिसके नाज उठानेमें।

अभी ठहरो मंगायी है किताबें हमने 'ओविड' की,
उन्हें कुछ याद कर लूं तब मजा आये मनानेमें।

कोई 'सेक्शन' गिरफ्तारीका इनपर क्यों नहीं लगता,
यह क़ातिल बेधड़क आजाद फिरते हैं जमाने में।

कहीं हमभी न जल जाँयें, घर अपनाभी न जल जाये,
लगा है तार बिजलीका हमारे आशियानेमें।

अगर 'बेढब' तुम्हें ख्वाहिश है जेंटिलमैन बननेकी,
न हो कुछ और तो 'रेगुलर' रहो मूछें मुड़ाने में।

धोती पतलूनके अंदर

अमरसे अपनी आहोंके जो पैदा बिललियाँ कर लूँ,
नयी एक रोशनी में आज मै हिंदोस्तां कर लूँ।
तअज्जुब क्या कि पैदा दोस्तोंमें कद्रदां कर लूँ,
अगर हाथोंमें अपने एक मिस शीरीं जुबां कर लूँ।
किसी मिस फ़ैशनेबलको अगर मै मेहमां कर लूँ,
अजब क्या है कि अपना झोंपड़ा रश्के जनां कर लूँ।
अगर क़ाबूमें अपने तुझको ए पीरे मुगाँ कर लूँ,
बिना लाइसेंसके मैं घरपे एक मैकी दुकां कर लूँ।
किसी ढबसे किसी लीडरको मैं जो मिहरबां कर लूँ,
तो एक अच्छी सी सरविस में जहाँ चाहूँ वहाँ कर लूँ।
मुझे भी लोग झुक झुक कर करेंगे बंदगी एकदिन,
अगर लंदनमें जाकर पास कोइ इम्तिहां कर लूँ।
अगर दो चार नुसखे पालिसी के हाथ आ जायें,
यकीं है अपनी मुट्ठीमें अभी सारा जहाँ कर लूँ।
जो मिल जायें मुझे कमसिन मिसें औ बोतलें मैकी,
ज़रूरत क्या वहाँ जानेकी लंदन मैं यहाँ कर लूँ।

बुलायेंगे डिनरमें लोग उनको और मुझकोभी,
किसी पहलूसे बीवीको अगर मैं नौजवां कर लूँ।
रटा सब वेदो कुरआँ फिरभी आखिर रह गये कोरे,
अभी मिलजाय 'प्रोफेसर-शिप' जो मिल्टन बरजवां करलूँ।
नये युग में भी आसानी से मिल जाये मुझे सरविस,
अगर धोतीको मैं पतलूनके अंदर निहा कर लूँ।
इसी हसरतमें बुलबुलने तड़पकर जान तक देदी,
मैं अपना आशियाँ कर लूँ मैं अपना बागवां कर लूँ।
यह सारी डिगरियाँ बेकार हो जायेंगी दम भरमें,
जो थानेदारको 'बेढब' कहीं मैं बदगुमां कर लूँ।

दूकान गंगारामकी

डिगरियाँ कालेजकी कुछ निकलीं न मेरे कामकी,
काम कुछ आयी अगर तो बंदगी हुक्कामकी।
स्वर्ग से बढ़कर बुलंदी है तुमारे बामकी,
हो नहीं सकती पहुँच बँगलेपे खासो-आमकी।
कोशिशें कितनों ने कीं पर ठाठ पर सब रह गये,
टाइटिल मुझको मिली है आशिके बदनामकी।
छोड़कर सब देवता माला उन्हीं की जप रहे,
धूम है चारो तरफ इस युगमें उनके नामकी।
'सेफटी रेजर' से मिस्टर 'शेव' कर लेते हैं रोज,
अब जरूरत कुछ नहीं है हिंदमें हजामकी।
नींद से दुनियाँ के अब सब लोग हैं उठने लगे,
यह जफा है जानबुलपर गरदिशे अय्यामकी।
रूख हवा का फिर गया, ठंडक हुई पानी गिरा,
आँख पर बदली नहीं अबतक किसी हुक्काम की।
अब न वह 'ब्यूटीं' चमनकी है, न अब वह फूल हैं,
कुछ करोटन हैं लगे, हैं टहनियाँ कुछ पामकी।

मरनेको तैय्यार हैं कंजूस आशिक आपपर,
जो कहीं मिल जाय थोड़ी संखिया बेदामकी।
फिर वही चुक्कड़ वही ठर्रा वही भूने चने,
फिर वही 'बेढब' वही दूकान गंगारामकी।

कालरसे गलेकी घोंटकर

वतन वाले फजूल उनसे तलब इमदाद करते हैं,
जो आधी उम्र तक यूरपकी हिस्ट्री याद करते हैं।
हम स्पीचोंमें अपनी जिंदगी बरबाद करते हैं,
जिन्हें सुन सुनके वह हम पर सितम ईजाद करते हैं।
मेरी गरदनपे खंजर फेरकर इरशाद करते हैं,
तुम्हींको क्या तुम्हारी रूहभी आजाद करते हैं।
समझते हैं कि लड़के हैं बहल जायेंगे बातोंमें,
वह बातोंकी मिठाईसे मेरा दिल शाद करते हैं।
"जरा सी चोट पर इतनी शिकायत शोर यह बरपा"
बड़ी भोली अदा से मुझसे वह इरशाद करते हैं।
लगा कर पाउडर कालेसे बन जाते है हम गोरे,
खुदासे जो न हो उसको भी आदम-ज़ाद करते हैं।
नहीं कम हैं हमीं दुनियाँके न्यूटन या एडीसनसे,
नया हर रोज़ वहभी तो सितम इजाद करते हैं।
तअज्जुब है कि उनकीभी नहीं लंदनकी मिस सुनती,
जो कालरसे गलेकोकर घोंट फ़रयाद करते हैं।

हजूरका आसरा

शकवा नहीं न आपसे कोई गिला मुझे,
दे दीजिये जनाब मेरा दिल लिया मुझे।
थोड़ी सी पीके मिसने जो पेग दे दिया मुझे,
समझा बहिश्त आज ज़मापर मिला मुझे।
होगी न कारगर कभी कोई दवा मुझे,
लदनकी थोड़ी चाहिये ठंढी हवा मुझे।
कैसे पसंद खीर व हलुवा भला लगे,
होटलके केको सूपका चसका लगा मुझे।
चेहरे पे रोज़ सोप रगड़ता हू बार बार,
उस परभी आप कहते हैं काला तवा मुझे।
मंत्रीके दरपे नाक रगड़ता हूँ रात दिन,
मेरी बलासे कहले कोई बेहया मुझे।
अकसीरसेभी बढ़के वह होगी मेरे लिये,
मिट्टीका तेल वह जो पिलादे जरा मुझे।
डिगरीसे नौकरी तो मिलैगी कभी नहा,
बस आपका हजूर है एक आसरा मुझे।

गाली जो दीजिये तो वह इंगलिश में दीजिये,
करनी यही है आपसे एक इलतिजा मुझे।
मुद्दत से देखता हू नये साल का गज़ट,
'लायल' रहा मगर न मिला कुछ सिला मुझे।
'बेढब' का नाम लिस्ट में उनके नहीं मिला।
होनेका 'ग्रेट' कौनसा ज़रिया रहा मुझे।

मुसलमां होंगे

तेरे दीवानोंके फैशनके यह सामां होंगे,
'सेफ़्टी पिन' की जगह ख़ारे-मुग़ीलां होंगे।

लेके डिगरी यह समझते थे कि होंगे डिपटी,
अब तो यह भी नहीं है 'चांस' कि दरबां होंगे।

हूर जन्नतमें मिलेंगी यह है एक दूरकी बात,
साथ 'लेडीज'-के हम आज ही रक़्सां होंगे।

लाटने हाथ मिलाया है जो मौलानासे,
रश्क पंडितको है अब वह भी मुसलमां होंगे।

पढ़के इंगलिश वह गये भूल 'मदर टंग' अपनी,
क्या कभी अपनी जबां भूलते हैवां होंगे।

नोकरी मिलती नहीं कोई तो कुछ फ़िक्र नहीं,
चलके ससुराल में अब कुछ दिनों मेहमां होंगे।

आशिक़ोको न कोई चीज़ 'क्रेडिट' पर देना,
रोज़ मरते है यह, फिर आप परेशां होंगे।

बाद मरनेके मेरी क़ब्रपर आलू बोना,
हश्र तक यह मेरे 'ब्रेक-फास्ट'के सामां होंगे।

उम्र सारी तो कटी घिसते क़लम ए 'बेदब',
आख़िरी वक़्तमें क्या ख़ाक पहलवां होंगे।

रामदाना

चले अब बाल्डविन साहब यह 'लेबर' का ज़माना है,
जनाज़ा कैपिटल वालोंका लदन से रवाना है।
वह कहते हैं कि मुझको पार्टीमें आज जाना है,
'हेंडक' है अब न 'बिजनेस' है, नया उनका बहाना है।
उन्हें तो आज सिनेमामें किसीके साथ जाना है,
जुदाईमें गज़ल लिख लिखके अब हमको भी गाना है।
मुझे तो लूटकर धीरेसे वह घरको रवाना है,
दुहाई यह मेरी सरकार कैसा कारखाना है।
ताज्जुब क्या बरहमन भी करै बोतलकी अब पूजा,
नया युग आ गया है आज ह्विस्की का जमाना है।
मै उनके बापके डरसे वहाँ तो जा नहीं सकता,
मगर हां डाकसे अपना यह ज़ख़मी दिल रवाना है।
मुहब्बतका न हो कुछ जोश दिलमें तो चलो सिनेमा,
वहाँ तो आशिकों के ढालनेका कारखाना है।
हमारे नौजवां शैदा हुए इतने मिठाईपर,
मुहासा भी मिसोंके मुँहका उनको रामदाना है।

डिगरियोंका बंडल

अगरचे 'ब्यूटी'—को लव करू मैं तो बात कोई बुरी नहीं है,
खुदाका 'जलवा' जो बुतमें देखूं तो देखना काफिरी नहीं है।

मंगाके चँगीसे एक रोलर चला दो दिलपर हमारे साहब,
मसलनेसे रोज़ चुटकियोंमें अगर तबीयत भरी नहीं है।

बहुत है 'इनकम' दिलों की तुमको कहीं न लग जाय टैक्स देखो,
जनाब आया है वह जमाना कि इससे कोई बरी नहीं है।

जनाबे प्रोफेसर हुए हैं आशिक, चले हैं वह नापने कमरेको,
नहीं है मालूम उनको शायद कि यह 'जियोमीटरी' नहीं है।

नहीं हुकूमत चलेगी उनपर फजूल हैं कोशिशें तुम्हारी,
यह है मुहब्बतकी एक दुनियाँ जनाब यह 'टीचरी' नहीं है।

दिखाया टूटा हुआ दिल अपना जो मैंने 'सरजन'को तो वह बोला,
बनेगा लंदनमें दिल तुम्हारा यहा यह कारीगरी नहीं है।

वह आज होंगे हमारे मेहमां तो डर है क्या 'टी' पे टाल देंगे,
जरासा फैशनके होगा बाहर कि 'कप' तो है तशतरी नहीं है।

पुराने कुछ सूटभी पड़े है, बकसमें बंडल है डिगरियोंका,
हुजूर कहनेको है जबां भी, मगर कहां नौकरी नहीं है।

कलम न 'बेदब'—का रुक सकेगा, भरे हुए 'पारकर' पड़े हैं,
गलासे चिल्लाके लोग कहले, कि यह कोई शायरी नहीं है।

सिल्लीपर उसतरा

फीस लेकरभी बहानें वह सदा करते रहें,
डाक्टर माशूकसे क्या कम जफा करते रहे।

क्या बताएं जाके कौंसिलमें वह क्या करते रहे,
दावतें खाते थे, फिर लेक्चर दिया करते रहे।

दिलके दुशमनसे ही हम दिलका गिला करते रहें,
दर्दकी हम आजतक उलटी दवा करते रहे।

आशिकोकी जिंदगी कटती रही इसी बातमें,
बुतकी याद औ बेवफ़ाईका गिला करते रहें।

दाम होता साकिया तो कोई होटल क्या न था,
मुफ्त पीनेवाले तेरा आसरा करते रहे।

थी न जब व्हिसकी तो ठर्रा ही पिलाना था मुझे,
कबसे तेरी मिन्नतें हम साकिया करते रहे।

अब डिनरमें जाएं कैसे लेके धोबीका जवाब,
मागकर उससे तो वह कपड़े लिया करते रहे।

लड़ते हैं बीबीसे वह दिन रात यह कहते हुए,
सुनते हैं आदमभी हौब्वासे लड़ा करते रहे।

फेल जब मोटर हुई बोले कि इसको ठेलिये,
मुफ्तमें चढ़ता था, उसकी यह सजा करते रहे।

आज बंगले पर मिनिस्टरके वह शायद जांयगे,
तेज सिल्लीपर जो घंटों उमतरा करते रहे।
अब जरा 'बेदब' मुहब्बत तुम जताना देखकर,
लोग छिप छिपकर मिनिस्टरमे गिला करते रहे।

जबांको संभालके

माशूककी गलीमें चलो देख भालके,
कतवार फेंकते हैं वह सीना उछालके।
आये हैं दिन जो आजकल उनके ज़वालके,
गाहकभी अब नहीं रहे लंदनके मालके।
वह क्या रिफार्मर जो न पीता हो ढालके,
बीबी वह क्या जो रहती हो बे 'बाबूड' बालके।
हैं आपभी अजीब पुराने खयालके,
चौकेमें खाने बैठे हैं जूता निकाल के।
मालूम क्या कि आपने इंगलिशभी है पढी,
खाते नहीं जो सुबहको अंडे उबालके।
आखिरको मेरी आंख लड़ी उनकी आंखसे,
क्या जग यह हुई है बिना बोल-चालके।
आनरके वास्ते यह जरूरी है कार हो,
चाहे वह 'ओल्ड' हो व चले टेल ठालके।
कोई शरीफ आपको कैसे कहे भला,
चलते हैं आप रेलते बे 'होल्ड-आल' के।

अफसर नहीं पुलिसका है वह और होगा कुछ,
जो बोलता है अपनी जबांको संभालके।
योरपकी सैरके लिए सब ठीक ठाक है,
हैं मँतजिर वह बापके बस इन्तकालके।
बुलबुलके चहचहेने उसे कैद कर लिया,
'बेढब' जो बोलना तो जबांको संभालके।

आतंक निग्रह पिल

जोश खूंमें है नहीं ताकत नहीं कुछ दिलमें हैं,
आसरा नेता का है मरजी उन्हींकी बिलमें है।

दूध-घी मिलता नहीं कसरत महज अब ड्रिलमें है,
आजकल ताकत तो बस 'आतंक निग्रह-पिल'में है।

मीठी बातोंसे वह बहकाते हैं हमको बार बार,
उनकी बातोंकी कहाँ लज्जत शुगरकी मिलमें है।

बाप बूढ़ा घरमें है बैठा गोया दरबान है,
लेडियोंके साथ लड़का नाचता महफिलमें है।

पढ़के अंग्रेजीभी अच्छी नोकरी मिलती नहीं,
कोई क्लर्की कर रहा है, कोई भरती मिलमें है।

खैरियत उसकी नहीं है जिसपे पड़ जाये नजर,
आपकी आँखोंमें जो है वह कहाँ राइफिलमें है।

दें कहांसे दान या चंदेमें रुपये आपको,
आजकल मेरा दिवाला होटलोंके बिलमें है।

'बाल'-के आगे नहीं बाकी मजा कुछ रासमें,
लुत्फ बंसीमें नहीं, जो कुछ है वह 'ब्यूगिल'-में है।

पूछता पंडितको कोई है न मौलानाको अब,
पूछ 'बेदब' आजकल सरकारकी बस बिलमें है।

नमस्ते-बंदगी

न हो दिलमें वतनका प्रेम तो फिर क्या जवानी है,
न हो मस्ती अगर मयमें तो मय क्या है वह पानी है।

हमें बदनाम करनेकी जो इस बुढ़ियाने ठानी है,
यह मिस मेयो नहीं है, पूतनाकी खास नानी है।

पता मुझको नहीं कुछ इंडियामें भी है 'लिटरेचर',
मगर हां याद सारा मिलटनो-बेकन जबानी है।

जो हिस्ट्री कोई हिस्ट्री है तो वह योरपकी हिस्ट्री है,
हमारे देशकी हिस्ट्री तो एक झूठी कहानी है।

नजाकत औरतोंसी, बाल लंबे, साफ मूँछें हैं,
नये फैशन के लोगोंकी अजब सूरत जनानी है।

लचक पड़ता है झोंकेसे हवाके, क्या नजाकत है,
नहीं मिस्टरका है यह जिस्म, एक टहनी पुरानी है।

कदम रखा जहां दुनियांमें हमने, यह सदा आयी,
निकालो इसको यह तो 'ब्लैक' है हिंदोस्तानी है।

जनेऊ इनकी नेकटाई है, पाउडर इनका टीका है,
नये बाबूको ह्विस्की आजकल गंगाका पानी है।

पकड़ कर हाथ झकझोरो किसीसे जब मिलो 'बेढब',
नमस्ते-बंदगीकी जंगली आदत पुरानी है।

डारविनकी थियोरी

मँछ मुड़वानेका उनको शौक पैदा हो गया,
अब तो मजनूँका भी चेहरा मिस्ले लैला हो गया।
सिरसे बढ़कर पांवका मिस्टर के रुतबा हो गया,
टोकी टोपी हो गयी तो दसका जूता हो गया।
इतने दिन पर आपने मिलने-को लिखा है 'लेटर',
वस्लका शरबत मिला है जब वह सिरका हो गया।
पूछते हैं लोग उनको ही जहां जाते हैं वह,
एक गोरे रंगमें क्या रंग पैदा हो गया।
क्या हुआ करलीं इकट्ठी आपने जो डिगरियाँ,
सबसे अच्छी नौकरीमें जेल वाला हो गया।
अबभी तो वादा पुराना आप पूरा कीजिये,
हमरतें बूढ़ी हुईं औ मैं भी बूढ़ा हो गया।
बाकी है शोफरकी 'पे' पेट्रोल आता है उधार,
कारकी तो शान है लेकिन दिवाला हो गया।
नाचमें देखा मिसोंके साथ उनको कूदते,
डारविन साहबकी 'थियोरी'का खुलासा हो गया।

लेख 'फ्री', कागज 'क्रेडिट' पर, फंस गया रद्दीसा प्रेस,
जिसकी देखो अब वही अखबार वाला हो गया।
मैं समझता हूं कि जन्नत मिल गयी मुझको यहीं,
दाखिला क्लर्कीमें 'बेदब' आज अपना हो गया।

बेढबसे पाला

मेरे माशूकका दिल कोई अलबम या रिसाला है,
कोई वह म्युजियम है या कि कोई चित्रशाला है।

मिसोंकी जुल्फका उल्फतमें सौदा होने वाला है,
बयाना दे चुका दिल, और क्या दूँ अब तो ठाला है।

न पिस्टल है न राइफिल है, न खंजर है, न भाला है.
नया 'चेपन' निगाहोंका अजब तुमने निकाला है।

कलेजा जल गया, दिल दे चुका, अब और क्या लोगे,
बचा था फेफड़ा 'थाइसिस' ने डेरा उसमें डाला है।

मुड़ाई मूँछ, पहना सूट, पौडरभी मला मुँहपर,
मगर वह तो सदा कहती रहीं मुझको कि काला है।

एलेकशनमें पड़ा जो वह नहीं बाहर निकल सकता,
सँभलकर जाइये इस ओर यह मकड़ीका जाला है।

जो इतने दिल लिये तुमने कहाँ रखे हैं बतलाओ,
'डिपाजिट' बंकमें है या कि यों ही बेच डाला है।

बना है ठाट मिस्टरका बड़े लीडर है पबलिकमें,
मकानमें करते है फाके, गिरो घरका कबाला है।

इधर 'लव' में यह गरमी है कि पिघला जारहा है दिल,
इधर ठंडा है दिल उनका पड़ा 'बेढब' से पाला है।

नमकका डीपो

नये अंदाजके निकले वह कातिल देखते जाओ,
किया करते हैं वह मोटरसे घायल देखते जाओ।
खिलाकर मुझको दावत कहते हैं बिल देखते जाओ,
ज़रा होटलके लोगो, मेरी मुश्किल देखते जाओ।
वतनसे की मुहब्बत उसका हासिल देखते जाओ,
गलेमें तौक पाओंमें सलासिल देखते जाओ।
बहकनेसे विलायतमें नहीं कुछ काम चलनेका,
ज़रा भारतकाभी कुछ जोश 'चर्चिल' देखते जाओ।
न फाउंटेन पेन, न ऐनक है, न कालर है, न नेकटाई,
भला इनको कहेगा कौन काबिल देखते जाओ।
लिए सर्टिफिकेट आफिससे आफिस घूमते हैं हम,
यह सारी डिगरियोंका आज हासिल देखते जाओ।
मिसोंके साथ मिस्टर नाचते हैं बैंड बाजेपर,
नयी तहजीबकी कैसी है महफिल देखते जाओ।
भला क्या 'शार्ट साइटेड' हाल समझेगा मेरे दिलका,
जरा चश्मा लगा कर तुम मेरा दिल देखते जाओ।

जुदाईमें बराबर तार आँसू के निकलते हैं,
नहीं है आँख यह, आँसूकी है मिल देखते जाओ।
लगाकर मुँहपै पाउडर बीबियाँ अब मेम बनती हैं,
यह देसी भीतपर यूरपकी 'कहगिल' देखते जाओ।
हुई है जबसे पिकेटिंग बंद मैखाने हुए सारे,
जमी है क्लबमें अब रिंदोंकी महफिल देखते जाओ।
नमकके जितने 'डीपो' हैं, चढ़ाई आज है उनपर,
हसीनोंकी जहाँके अबतो मुशकिल देखते जाओ।
लिपस्टिक, क्रीम, पाउडर सब लगा रखा है चेहरे पर,
नयी रंगीन पुस्तक की यह टाइटिल देखते जाओ।
कोई जब काम होता है बुला लेते हैं वह मुझको,
मगर करते नहीं दावतमें शामिल देखते जाओ।
जलाता है बहुत आहिस्ता आहिस्ता मेरे दिलको,
मेरा माशूकभी 'बेढब' है काहिल देखते जाओ।

मोटर कारकी चोट

'लव'–के 'बैटिल फील्ड'–में डरते नहीं हम वारसे,
लड़ पड़ेंगे हम, न मानेंगे अगर वह प्यारसे।
पास मत आना, मगर मिलते तो रहना 'फार'–से,
बस मेरी 'रिक्वेस्ट' थोड़ी है यही सरकारसे।
दूरसे रौनक तुम्हारी और हो जाती है कुछ,
घाटकी ब्यूटी अगर कुछ है तो गंगा पारसे।
आपका असबाब तो क्या, मैं उठालूँ आपको,
मेहरबानी हो अगर लें काम मुझ बेगारसे।
रोज यों तो शहर भरमें है हमारा हर तरफ,
डर लगा करता है लेकिन उनके खिदमतगारसे।
डिगरियाँ करके इकट्ठी आफिसों की सैर की,
'वांटेड'-की लिस्ट अब चुनता हूँ मैं अखबारसे।
कोई मारा है अदाका कोई चितवनका शिकार,
मेरे सीनेपर लगी है चोट मोटर कारसे।
देखनेको हैं तड़पती आपको पर क्या करूँ,
जा नहं सकतीं वहाँ आँखें हमारी तारसे।

आपका चेहरा ही काफी है डराने के लिए,
क्यों डराते हैं हमें तब तोप या तलवार से।
हाथ उनके दुख गये, पर वाह रे आशिकका दिल,
तुम न खिसके इंच भर भी लाठियोंकी मारसे।
क्या धरा 'मेरेज'—में है, है जिंदगीका लुत्फ तब,
जब कि लव हो जाय सिनेमाके किसी स्टारसे।
पास मैं रहता हूं लेकिन मुझको 'सकसेस' कुछ नहीं,
हो गयी है 'कोर्टशिप' उनकी वहां तो तारसे।
करते हैं 'रिक्वेस्ट' 'बेदब' आप फिर लड़ते भी है,
यह शरारत आप करते है बहुत सरकारसे।

पत्थरकी सिल

आजकल पहले जमाने के रहे कातिल नहीं,
'कैश' ले लेते हैं वह करते हमें बिसमिल नहीं।
गर्ल वह 'मैरेज'—के हो सकती कभी काबिल नहीं,
जो किसी स्कूलके अंदर हुई दाखिल नहीं,
नाजका इतना न लादो बोझ नाजुक है बहुत,
आदमीका दिल है यह पत्थरकी कोई सिल नहीं।
उनके मीठे होठकी तारीफ जब करने लगा,
हँसके वह बोले कि यह कोई शुगरकी मिल नहीं।
'इनविटेशन' मिल गया, जाऊं डिनरमें किस तरह,
पासमें मोटर नहीं, गाड़ी नहीं, साइकिल नहीं।
कार है, कोठी है, बँगला है, बहुत है बंकमें,
कुछ नहीं है उनके दिल में जब हमारा दिल नहीं।
तुम अगर चाहो कि मैं तुम पर मरूं यह है कठिन,
हां करा दो जान बीमा तब कोई मुश्किल नहीं।
उनके लवमें काम चल सकता नहीं दिलसे महज,
जेब कर देते हैं खाली, सिर्फ लेते दिल नहीं।

गम मनाता बापके मरने का लेकिन क्या करूं,
नामकी मेरे उन्होंने कोई छोड़ी 'बिल' नहीं।
हो न चेस्टर पास तो ले लो मुझे तुम साथमें,
सख्त है सरदी तुम्हें लग जाय देखो 'चिल' नहीं।
किस तरह 'बेदब' लिखें अब 'ह्यूमरस' कविता जनाब,
'ब्रेन' सिरमें है नहीं, पहलूमें उनके दिल नहीं।

दिलका सेल

थोड़ीसी: ह्विस्की मिले, पीनेको थोड़ा 'एल' हो,
दालमें परवा नहीं, जो घीके बदले तेल हो।

लोग गधाभी नहीं रखते जो वह बे 'टेल' हो,
वह तुम्हें रखेंगे कैसे, तुम तो बी० ए० 'फेल' हो।

मय नहीं पीता, मगर इसके लिये तैयार हूं,
पीलूँ उनके हाथसे मिट्टीका चाहे तेल हो।

डिगरियोंकी पूछ थी पहले मगर वहभी गयी,
अब तो दो की पूछ है, हरिजन हो या 'फीमेल' हो।

नौकरी क्या शादियाँ भी आजकल दुशवार हैं,
पासमें जब तक न बी० ए० या एम० ए० की 'टेल' हो।

ए गुनहगारो डरो मत होगा अब आसां सफर,
सोच क्या हैं, अब तो शायद नर्कतकभी रेल हो।

उनका लड़का लवके कालेजमें एल. एल. डी होगया,
अब नहीं परवा अगर बी. ए.—में बरसों 'फेल' हो।

उनकी तिरछी मांग, तिरछी है नजर, तिरछी भवें,
हम हैं सीधे आदमी फिर उनसे कैसे मेल हो।

बेचनेके वास्ते हम मुफ्तमें तैयार हैं,
प्रेम के बाजारमें 'बेदब' जो दिलका 'सेल' हो।

सीनेका दर्द

गालियाँ इङ्गलिशमें देते थे मज़ा आता रहा।
'फूल' कह कर हंस दिये सारा गिला जाता रहा।
आज उतनी 'पे' नहीं मिलती कहींपर भी मुझे,
कालेजोंमें जिस कदर इनआम मैं पाता रहा।
जो सिविल सरजनने 'प्रेसक्रिपशन' लिखे बेकार थे,
उनका खत सीनेपे रखा दर्द सब जाता रहा।
पश्चिमी तहजीब बंगलेपर मुझे आई नजर,
साथ कुत्तेके वह अपनी मेजपर खाता रहा।
'एकटिंग'—ने दिया धोखा सिनेमामें मुझे,
देखकर तसवीर चलती फिरती दिल जाता रहा।
बत्तियाँ बिजलीकी सड़कों पर बनारसमें लगीं,
रातमें 'बाकिंग'—का पहला सा मजा जाता रहा।
यह भी कोई 'पालिसी होगी हमारे 'हार्ट'—की,
क्या कहूँ क्यों वे कहे 'पहलू'—से दिल जाता रहा।
वह समझते थे कि मैं स्पीच देता था वहां,
सुनने वाले यह समझते थे कि चिल्लाता रहा।

आज देखा है गजटमें हो गया तहसीलदार,
जंट साहबको जो कल तक बूट पहनाता रहा।
हो गये लीडर जो 'बेदम' बात उसमें एक है,
लेकचरोंके जोरमें जनता को बहकाता रहा।

खाली

तुम्हें सिनेमासे कम फुरसत है, हम ट्यूशनसे कम खाली,
चलो बस हो चुका मिलना न तुम खाली न हम खाली।
ठहरना सामने उनके हमारा है भरम खाली,
भरी पिस्तौल उधर उनकी इधर अपनी कलम खाली।
वहां हिस्कीके हो जाते हैं पीपे एक दम खाली,
यहाँ क्या-हाथ खाली, पेट खाली और हम खाली।
भला कैसे सुनेंगे वह हमारी आरजू मिन्नत
उन्हें तो कानमें आती है एक आवाजे बम काली।
नहीं हम मांगते कुछ आपसे बस आरजू यह है,
हमारे हालपर कर दीजिये साहब करम खाली।
हमारा दिलभी वह लेकर गये अफसोस इसका है,
न होता गम अगर वह ले गये होते रकम खाली।
कलम घिस जाय उनकी बेवफाई मैं अगर लिखूँ,
बने एक पुस्तकालय जो लिखूं उनके सितम खाली।
जिधर सिगरेटका उड़ता था धुँआ सब लोग जा बैठे,
इधर हम आह भरते रह गये लेकर चिलम खाली।
न ज़र घरमें, न दिल पहलूमें, उस पर प्रेमका सौदा,
जरा भर लीजिये 'बेढब' तो अपना यह शिकम खाली।

आज बुद्धू भी कलक्टर हो गये

साफ जब दो चार कंटर हो गये,
हमने समझा हम कलक्टर हो गये।
अब खुदाका भी नहीं है डर उन्हें,
पीके एक चुक्कड़ बहादुर हो गये।
एक चिल्लुने किया इतना 'रिफार्म',
राहके कुत्ते बिरादर हो गये।
सारी दुनियाँ अब उन्हें घर हो गयी,
राहके कंकड़भी बिस्तर हो गये।
चूम लेते हैं कभी कुत्ते भी मुँह,
आपके आशिक तो 'टेरियर' हो गये।
पीके बे हरकत पड़े हैं 'रोड' पर,
आदमीसे आप 'न्यूटर' हो गये।
त्याग सिखलाती है सबको यह शराब.
बेच कर सब कुछ कलंदर हो गये।
जिस जगह चाहा वहीं सोने लगे,
पीके ह्विस्की 'फुल सलीपर' हो गये।

एक चुक्कड़ने दिखाया यह असर,
शेखजी बिल्कुल छछून्दर हो गये।
पीके जूठी लाट साहबकी शराब,
'आनरेरी' वह मजट्टर हो गये।
क्या बताएँ क्या मजा ह्विस्कीमें है,
पीते पीते हम एडिटर हो गये।
देखिये 'बेढब' पिकेटिंगका असर,
आदमी सरकारके सर हो गये।

हैज़लिन लगाते हैं

खुदासे रात दिन हम खैरियत उनकी मनाते हैं,
निडर होकर मजे से घूस लेना जो सिखाते हैं।
शिकायत उनकी नाहक हम जबाँपर अपनी लाते हैं,
यही क्या कम है हमको सामने अपने बुलाते हैं।
हमें क्यों लोग बातें दूसरी कहना सिखाते हैं,
जबां उनकी है अपना मुँह है उनका राग गाते हैं।
अगर दो गालियाँ देदीं लगादी बूटसे ठोकर,
बिगड़िये मत यह इज्जत है मुहब्बत वह जताते हैं।
नकल साहबके खानेकी जो की एक रोज होटलमें,
कटा मुँह, धँस गये कांटे, दवा अब तक लगाते हैं।
बड़ी 'इन्सल्ट' है मेरी जो कहना बापका मानूँ,
नहीं इङ्गलिश पढ़ी और रोब वह इतना जमाते हैं।
चमकते हैं बराबर फेस और पेटेंट शूज़ उनके,
वह काले मुँह पै अपने जब कभी हैज़लिन' लगाते हैं।
न बदरीनाथ जाते हैं, न अब जाते है वह काशी,
मिसोंके दरशनों को लंदनों - पैरिस वह जाते हैं।

तअज्जुब क्या अगर इनपर भी हैं आंखें लगी सबकी,
म्युनिसपलटीके मेंबर भी सुना है अब कमाते हैं।
किसी लीडरसे हम अपनेको फिर कम किस तरह समझें,
तुम्हें मालूम क्या हमने भी दो गज सूत काते हैं।
सुना है प्रेमियोंका 'राउंड' टेबुल आज बैठेगा,
इसीसे आज 'बेढब' को वह बंगलेपर बुलाते हैं।

सरविसका डर

पड़ी है जान आफ़तमें, करूँ मैं ध्यान किस-किसका,
इधर 'मरविस' है कालेजकी, उधर लव दिलमें है मिसका,
उन्हें स्कूलकी धुन है, हमें है ध्यान आफिसका,
पकाये कौन खाना बहस है यह काम है किसका।
पहन कर सूट डिगरी लेके क्लर्की खोजते हैं हम,
पढ़ी दस साल अंग्रेजी यही अंजाम है इसका।
जुदाईमें तड़पनेकी जरूरत अब नहीं कुछ भी,
भला है रेडियोंसे आजकल 'सिस्टम' नया 'किस' का।
वह कहते हैं कि डॅड बैठक तो करतब है गँवारोंकी,
जमाना आजकल है 'बैडमिंटन' और टेनिस' का।
टपक कर छतसे पानी जबकि भर जाता है सावनमें,
मजा आता है अपने झोंपड़ेमें हमको 'वेनिस'-का।
हुए 'बाटनी'-में बी एस सी पढ़ा 'क्राइसेंथिमम' क्या है,
पता लेकिन नहीं, है फूल गेंदेका कि नरगिसका।
चले सायंसके बल पर हटाने 'गाड'-को मिस्टर,
मगर तिल भर भी वह अपनी जगहसे तो नहीं खिसका।
लिखाते नाम उनके आशिकोंकी 'लिस्ट' में हम भी,
अगर होता न 'बेढब' हमको डर थोड़ासा सरविसका।

टीचरी

तुम्हारे 'फेस'—पर बेहद है 'लस्टर',
उजाला रातमें कर दो मेरा घर।
रहूं बेफिक्र अन्दर और बाहर,
जो खुश हो जांय बीबी औ मिनिस्टर।
नहीं है हैट बाबूजीके सिरपर,
पड़ा है झोपड़ीपर एक छप्पर।
म्युनिसपलटी मुझे जो 'परमिशन' दे,
बना लें हमभी घर उनकी सड़कपर।
अकेले मैं अगर पा जाऊँ उनको,
लिपट जाऊँ गलेसे जैसे मफलर।
कहाँ मिलता है घी दूध और मक्खन,
रटे 'टानिक' टमाटर और चुकंदर।
बसे रहते हैं फूलोंमें सदा जो,
यह भँवरे हैं कि हैं 'बाटनी'-के प्रोफेसर।
जो बे मूछोंकी दुनियां बाढ़पर है,
भला समझेंगे कैसे लोग 'जेंडर'।

जो नेचरसे मिली बैंगनकी सूरत,
टमाटर बन गये पाउडर लगाकर।
हुए एम ए किया फिर पास एल टी,
मिली 'पे' फिर भी सत्तर या बहत्तर।
इसीको टीचरी कहते है 'बेढब',
करो कापी 'करेक्शन' जिंदगी भर।

कर्म

कुछ नहीं मालूम 'लव'-का मर्म है,
प्रेमका बाजार लेकिन गर्म है।
जिसको देखो बन गया 'पोएट' वही,
आज•ल कविताका फैला 'जर्म' है।
खाके ठोकर सब तरफ जब कुछ न हो,
लीडरी आसान सबसे कर्म है।
उनको बीबी कहती है, 'ओ डियर ब्याय',
क्या ही कानोंको मधुर यह 'टर्म' है।
कानमें धीरेसे करता हूँ 'प्रोपोज',
दिल अभी उनका निहायत नर्म है।
उनसे सब बातोंमें बढ़ जाऊँ तो क्या,
मेरा काला, उनका उजला चर्म है।
उनका साया घुटनोंके ऊपर उठा,
आजकल इतनीभी क्या कम शर्म है।
मार्कस की माला सबेरे तुम जपो,
अब यही 'बेढब' तुम्हारा धर्म है।

वे भंगकी ठंडाई

हुआ हूं जबसे मैं 'यूरोपियन-ब्यूटी'-का शैदाई,
बिके सब 'फरनीचर' बाकी नहीं पाकेट एक पाई।
गये जब डिगरियां लेकर तो बँगलेसे सदा आई,
चले हैं नोकरी लेने न कालर है न नेकटाई।
वकालत पास करके डिप्लोमामें लग गई काई,
कचहरी रोज जाता हूँ मगर पाता नहीं पाई।
न पूछो हाल कुछ भी तुम वकीलोंमें कचहरीका,
जो बैठे 'बार'- में तो मार हो लेते हैं कुछ 'फ़ाई'।
मुझे लगता है डर भूकंप कालेजमें न आ जाये,
एककाए जब कभी दरजेमें वह लेती हैं अंगड़ाई।
टमाटरसा है चेहरा और चमचमसे हैं होठ उनके,
'विटामिन'औ मिठाई मिल गयी हैं हमको यकजाई
नशा दिलमें न हो 'बेढब' तो बे-लज्जत जवानी है,
भला बे भंगके किस कामकी होती है ठंडाई।

अजीब फूल

जब न दोनों का चूल-चूल मिले,
हम समझते वह फ़जूल मिले।
उनकी आँखों से लड़ गयीं आँखें,
यह लड़ाईके खूब 'टूल' मिले।
क्यों न आँखोंमें मेरी आ बैठो,
चाहते हो जो 'रूम' कुल मिले।
दो मेरा दिल, अगर न दो अपना,
सूद बाज आये हम, जो मूल मिले।
राहमें प्रेमके चुभे कांटे,
आम बोये मगर बबूल मिले।
जिक्र वादोंका सुनके वह बोले,
तुमभी हमको अजीब 'फूल' मिले।
चलके 'बेढब' वहीं रहो अब तुम,
प्रेमका जिस जगह कि 'रूल' मिले।

अखरोटका फ्रूट

जब कभी आता है 'सीजन' वोटका,
खूब बढ़ जाता है 'बिजनेस' नोटका।
मर रहे हैं आज जब खाने बगैर,
कोई भी कहता नहीं यह लो टका।
रातमें ह्विसकी औ दिनमें लीडरी,
'ग्रेट' बननेका यही है टोटका।
हो न जब पैसा तो बीबी 'किक' करें,
सेठ भी झुक कर मिलें जो हो टका।
सख्त है परदा मगर चेहरा है 'रफ',
सुत नहीं यह 'फ्रूट' है अखरोटका।
रोज मैं मिलता गलेसे आपके,
बन गया होता जो कालर कोट का।
पेट 'पब्लिशरों'-का यों है बढ़ रहा,
जिस तरह बढ़ता है थन 'शो-गोट'-का।
दर्दमें ही लुत्फ रहता है यहाँ,
क्या अजब है हाल दिलकी चोट का।

'जपंर' औ सारीमें सब 'पे' खत्म है,
फिर कहाँसे दाम आये कोट का।
मांगते हैं लोग कविता रोज-रोज,
यह नहीं कहते कि 'बेढब' लो टका।

ट्रंकके आगे पिटारा

घर हमारा पर हमारा कुछ नहीं,
हिंदमें हिंदू बिचारा कुछ नहीं।
लूट कर मुझको अदासे कह गये,
सब हमारा है तुम्हारा कुछ नहीं।
सामने साहबके हम क्या चीज हैं,
ट्रंकके आगे पिटारा कुछ नहीं।
रोके कौंसिलमें किये प्रस्ताव पास,
और उनका यह इशारा कुछ नहीं'।
उनका धोबी भी कलक्टर हो गया,
औ यहाँ एम ए बिचारा कुछ नहीं।
जब नहीं 'पावर', एजीटेशन' फ़ज़ूल,
दांत हों गायब तो आरा कुछ नहीं।
लौटकर लंदनसे कहते हैं सपूत,
यह 'रबिश' भारत हमारा कुछ नहीं।
वह कहैं 'यू डैम', हम बोलें 'हजूर',
इससे 'ब्यूटीफुल' नजारा कुछ नहीं।

बाल कटवाए न मुँहमें है सिगार,
तुमने बीबीको सुधारा कुछ नहीं।
दूध घी जब हो न 'टानिक' क्या करे,
जब नहीं ईंटें तो गारा कुछ नहीं।
कैसे कहते हो कि पत्थर है वह दिल,
प्रेमका उसमें शरारा कुछ नहीं।
रेत तो फांकी अरबकी शेखने,
और उसे गंगाकी धारा कुछ नहीं।
ठोकरें खाओ बुतोंके संगमें,
और 'बेदब' तुमको चारा कुछ नहीं।

डायरके चाचा

जरा सी बात पर इतने खफा हो,
न समझा था कि डायर के चचा हो।
तुम्हें मैं मान लूँगा तुम खुदा हो,
मगर उस वक्त जब मुझ पर दया हो।
तुम्ही हो 'आमलेट' औ 'केक'-बिस्कुट',
तुम्ही होटलके कटलट-कोरमा' हो।
दुआएँ मांगते हैं उनके प्रेमी,
जो वह गाली दें उसमें भी मजा हो।
हमें क्या राहमें हो देख लेंगे,
तुम्हारा उनके घर जाना भला हो।
कहीं मिल जाय एक मोटर पुरानी,
समझ लो बस रईसे इण्डिया हो।
यही बीबीकी हो 'क्वालीफिकेशन',
हसीं हो, कुछ पढ़ी हो, बेहया हो।
नयी दुनिया नयी अब रोशनी है,
जरूरत है नया अब देवता हो।

बनें फौरन वह हिन्दूसे मुसलमां,
अगर 'सरविस'-का कुछ भी आसरा हो।
हमारा घरभी कर दो आके रोशन,
कि तुम बे तेल बत्तीके दिया हो।
मिठाईकी नहीं है चाह 'बेढब',
मजा आलूमें है जो चटपटा हो।

खुला जंपर

उनकी मसजिद खुल गयी है उनका गिरजाघर खुला,
बुत अभी परदेमें हैं अब तक नहीं मंदिर खुला।
देखिये चेहरा खुला, बाहें खुलीं औ सर खुला,
जल्द आयेगा नज़र उनका हमें जंपर खुला।
कमसे कम तो दो तरक्की हमको आती है नज़र,
बीबियोंका मुँह खुला, औ बाबुओंका सर खुला।
हो रही थी बात जबतक खूब बहलाते रहे,
मुझको रुखसत कर दिया हिस्कीका जब कंटर खुला।
बोरडिंग हाउस हुए कायम हर एक स्कूलमें,
सिगरेटों बीड़ीके पीनेका नया क्लब घर खुला।
नौकरीकी खोजमें यों घूमते है ग्रेजुएट,
घूमता है जिस तरह धोबीका कोई खर खुला।
क्या खुलेगा गेट होटलका तुम्हारे वास्ते,
जब न मैखानेका 'बेढब' रातमें टट्टर खुला।

पश्चिमकी हवा

बस एक उनको खदा है और मैं हू,
मुकद्दरका बदा है और मैं हूँ।
वफाओंपर जफा है और मैं हूँ,
यह किसमतका लिखा है और मै हूँ।
जिधर देखो बला है और मैं हूँ,
गजबका उनका 'ला' है और मै हूँ।
मिले डिगरी अगर बिक जाय घर तक,
यही सौदा नया है और मैं हूँ।
वहां वे मूँछ वालोंकी है महफिल,
यह मूछोंकी बला है और मै हूं।
जो आये सूटमें पास उनके बैठे,
मेरा कुरता फटा है और मै हूं।
तुम्हे मशहूर कर रखा है मैने,
तुम्हारा तजकिरा है और मै हूँ।
सुना है जबसे होगी वार उनसे,
यह 'टानिक'-की दवा है और मैं हूँ।

नहीं खाता मलाई और मक्खन,
दहीका बस बड़ा है और मै हूँ।
खड़ा रहता है दरवाजा वह रोके,
यह प्रियतमका चचा है और मैं हूँ।
मेरा छाता उठाकर चल दिये वह,
यह सावनकी घटा है और मैं हूँ।
मेरे घरमें नहीं पाओगे तुम कुछ,
यही मेरी कला है और मैं हूँ।
उड़ा जाता हूँ कनकौएसा 'बेढब'
यह पश्चिमकी हवा है और मैं हूँ।

मंकी ग्लैंड

हाथ मेरा हो जो उनके हैंडमें,
मैं समझ लूँ हूँ 'हेवेन'-के 'लैंड'-में।
दिल हमारा और है उनकी तरफ,
'अलस्टर' है जैसे 'आयर लैंड'-में।
हिंद में मानो न मानो तुम उन्हें,
कद्र है उनकी बहुत इंगलैंडमें।
क्या सुनें शहनाई हम बेवक्तकी,
दिल हमारा बंध गया है बैंडमें।
कौंसिलका अब 'सहारा' है मिला,
हम चले हल चलाने 'लैंड'-में।
हेल्थ सधारेगी न भारतमें कभी,
ठीक हो सकते हैं स्विटजरलैंडमें।
अक्ल डंकीमें वह ढूँढ़ेंगे कभी,
'यूथ' जो पाते हैं 'मंकी-ग्लैंड'-में।
कौन 'बेढब' हमको पूछेगा कहीं,
जब नहीं है पूछ अपने लैंडमें।

कोर्टशिप-गगनमें

मैं खोजता था उनको जब कुञ्ज और बनमें,
वह खेलती थी 'कैरम' एक मित्रके सदनमें,
पड़ता नहीं है धरतीपर पांव उनका तबसे,
जबसे सुना है होती है 'कोर्टशिप' गगनमें।
उनसे कहा कि थोड़ा 'मानस'-का पाठ करलो।
बोलीं कि मन हमारा लगता है 'बायरन'—में।
उनकी निगाह घायल कितनोंको कर चुकी है,
ताकत न होगी इतनी शायद मशीनगनमें।
'सरविस'—की धुनमें मैंने दुनियाकी खाक छानी,
अब भंग छानता हूँ मल कर भभूत तनमें।
छोड़ी है भात रोटी 'विटेमिनकी' धुनमें मैंने,
अब घास चर रहा हूँ दिन रात मैं चमनमें।
फिसले न दिल हमारा लंदनकी ओर क्यों कर,
है 'पोलसन'—का मक्खन हर एकके 'किचन'—में।
स्कूलकी पढ़ाईमें क्या धरा है 'बेढब',
शिक्षा तो मिल रही है सिनेमाके हर भवनमें।

सोया-बीन

लेके मंचूकों नजर जापानकी है चीनपर,
खाके मीठा लालची जैसे झुके नमकीनपर।

हम नहीं दुनियाँके आशिक हम न लट्टू दीनपर,
हम फिदा है आपकी इस नित नयी तसकीनपर।

रेडियोपर सारी दुनियाँको नचा देते हैं वह,
ध्यानभी देता नहीं कोई हमारी बीनपर।

मरना जीना है निगाहोंपर तुमारी मुनहसर,
जिंदगीकी नीव है रखी हुई संगीनपर।

देखता हूं जैसे इन आँखोंसे जलवा आपका,
जब नजर आती है ग्रेटा गारबो 'स्क्रीन'-पर।

दूध घी मक्खन तुम्हारे वास्ते तैयार हैं,
काट लेंगे जिंदगी हम अपनी सोया बीनपर।

फूलका बरतन तो रखते इन दिनों बस फूल हैं,
सभ्यता है इस जमानेकी खड़ी बस टीन पर।

लूट है, सिनेमा है, या तो है कहीं की मेम्बरी,
आज है संसारकी गाड़ी चली इस तीन पर।

आज वहभी टाटपर 'बेदब' पड़े हैं सो रहे,
पाँव नाजुक जिनके छिलजाते कभी कालीनपर।

बेकार जहाज हवाई है

जब दिलमें ताकत कुछभी नहीं,
सब बे मतलबकी ढिठाई है।
'रिजोल्यूशन' सारा रोना है,
सरपर बेकार पिटाई है।
'डिसपेपटिक' है 'नेशन' सारी,
आंखोंमें रतौंधी छायी है।
क्लर्की भी जब मिलनेकी नहीं,
कालेजकी फजूल रटायी है।
जब रंग नहीं अपना गोरा,
क्या कालर क्या नेकटाई है।
एक मिस कमसिन जब साथ न हो,
मूँछोंकी फजूल सफायी है।
'पापा' हैं, क्लब है, नाच है, अब,
'बेयरा' है 'गारजियन' उनका।
मामा हैं, जाल टेनिसका है,
घर है, बच्चा है दायी है।

हमको मंदिरसे क्या मतलब,
पूजासे क्या मिलनेको है।
हम तो हैं साहबके बंदे,
बँगला है और दोहाई है।
क्यों इतनी फौजें रखी हैं,
तुम कह दो हम मर जायेंगे,
एक तिरछी चितवन काफी है,
बेकार जहाज हवाई है।
बीबीसे भी घरके अंदर,
तुम बात न कुछ 'बेढब' करना,
मालूम नहीं है क्या तुमको,
घर-घरमें अब 'स्पाई' है।

मलाई है

आँख तो आँखसे लड़ आयी है,
दिलमें फिर क्यों कसक समायी है।
'गाड'-को उनके डर है 'म्यूजिक'-से,
नयी दुलहिनसा वह भी 'शाई' है।
मुँह भरा यह नहीं मुहासोंसे,
रामदानेकी मीठी लाई है।
उनकी तसवीर मिल गयी मुझको,
उम्र भरकी यही कमाई है,
देखते ही फ़िसल पड़ा यह दिल,
उनका चेहरा नहीं मलाई हैं।
इस तरह हैं हमारे दिलपर वह,
जिस तरह मूसपर बिलाई है।
क्यों न मुझको जलाये वह प्रियतम,
बेचता वह दियासलाई है।
याद करता हूं उनको जाड़ेमें,
अब तो 'बेदब' यही रजाई है।

वाटरफाल

हिज्रमें उनके हमारा आजकल यह हाल है,
मुँह बना है 'वालकेनो' आँख 'वाटर फाल' है।

वह कहाँ तक प्रेमियोंको अपने दिलमें दे जगह,
उनका दिल है यह नहीं काशीका टाउनहाल है।

लवके लीडर गर्म स्पीचें सुनाते हैं उन्हें,
उनका घर अब घर नहीं है, कांग्रेस 'पंडाल' है।

वह मेरे ऊपर किया करते हैं 'किक'-की 'प्राकटिस',
यह बदन मेरा अब उनके वास्ते फुटबाल है।

उनका चलना देखकर फिरकीका आता है मजा,
पढ़के कालेजमें यही सीखी उन्होंने चाल है।

खींच लेते हैं वह अपनी ओर जलदी रेलसे,
फांसनेको तारका फैला हुआ एक जाल है।

बाबुओंका खेल अब 'पिंगपांग' है या है 'केरम',
बीबियोंका 'गेम' अब हाकी है या फुटबाल है।

बचके हम जांये किधर जीना कठिन अब हो गया,
तिरछी चितवन है इधर तो उस तरफ भूचाल है।

मांगते क्या चीज हैं कल, आज तो दिल ले गये,
'लव'के 'इश्योरेंस'का 'बेदब' यह पहला काल है।

ऊंटोंका राष्ट्र गान

चीनो अरब सहारा हिंदोस्तां हमारा,
हम ऊँट है वतन है सारा जहां हमारा।

लाकर वह रेलो-मोटर हमको मिटा रहे हैं,
बालूसे बस है बाकी नामों निशां हमारा।

हिम्मत कहाँ किसीकी आ जाये सामने जो,
चलता है बलबलाता जब कारवाँ हमारा।

हमको खजूर भाता, आशिक बबूलके हम,
तुम आम लेके चाटो क्या है जयां हमारा।

गुलशनमें क्या धराहै खूबी है क्या चमनमें,
मैदां सपाट बालूका गुलसितां हमारा।

अंग्रेजके भी 'लायल' हम वारमें रहे हैं,
लन्दनसे आके कोई ले ले बयां हमारा।

फजलुहक और जिन्ना वह दिन हैं याद तुमको,
तुम लोग हांकते थे जब कारवाँ हमारा।

अफसोस कुछ न करता कोई मदद हमारी,
मालूम क्या नहीं है दरदे निहाँ हमारा।

बालूसे हम हैं पैदा बालूमें जायँगे हम,
समझो वहीं हमें भी दिल हो जहाँ हमारा।

विश्वके विषय

रूपके बाजारमें यों प्रेम परखा जा रहा है,
सूट कोई और कोई पासबुक दिखला रहा है।

शीशियोंमें सेन्टके हैं स्नेहको कुछ लोग भरते,
साड़ियोंका ढेर कोई बीन-बीन लगा रहा है।

हो रहा है चाहका सौदा कहींपर 'रेसतराँमें',
मूल्य कोई फिल्मके बाजारमें भुगता रहा है।

मोल लेनेको हृदय साहित्यका भी है सहारा,
रेतकर अपने गलेको गीत कोई गा रहा है।

वह जलन दिलमें कहां जो दूसरोंका दिल जलादे,
बल्बका है मंच, अभिनय नव-शलभ दिखला रहा है।

और कवि-सम्मेलनोंमें भी हृदयका हाट लगता,
दिल चुरानेके लिये कवि सैकड़ों बल खा रहा है।

प्रेमकी हो राह चिकनी इसलिये मुँह साफ करते,
मूंछ दाढ़ीको सवेरे शाम मूँड़ा जा रहा है।

नित्य होती हैं समर्पण पुस्तकोंपर पुस्तकें भी,
पारितोषिकसे किसीको आदमी बहका रहा है।

बे लिये वेतन पढ़ानेको युवक तैयार बैठा,
विश्वके सारे विषय 'बेढब' उन्हें सिखला रहा है।

सरकार हूँ मैं

लिये सब ज्ञानका भंडार हूँ मैं,
मगर पैसे बिना लाचार हूँ मैं।
मुझे इस भाँति क्यों फेंका बताओ,
कोई कूड़ा कोई कतवार हूँ मैं।
लगी रहती है फरमाइश तुम्हारी,
समझते हो कोई बाजार हूं मैं।
नहीं कुछ पुस्तकालयमें धरा है,
तुम्हारे वास्ते अखबार हूँ मै।
भटकता हूँ, न जीवनमें कहीं सुख,
किसीका एक खोया प्यार हूँ मैं।
कहा करता हूँ मैं तो मर रहा हूँ,
कोई कहता नहीं—बीमार हूँ मैं।
मिलेंगे अब, वह हैं पेट्रोल पूरे,
यहां मादक सुराका सार हूँ मैं।
वहाँ अंडा यहाँ बन्डेकी भाँजी,
वह हैं उस पार और इस पार हूँ मैं।

गले लगना तो क्या, छूते नहीं वह ,
कोई क्या शेरसा खूँखार हूँ मै।
मेरा सौदा न साधारण समझना ,
हृदयका कर रहा व्यापार हूँ मै।
न तुम मिलते न कागज मिल रहाहै,
लिखूँ क्या आजकल बेकार हूँ मै।
उन्हींके गिर्द मँड़राता हूँ बेढब',
वह हैं सेन्टर बने परकार हूँ मै।

कैरमकी गोटी

हमारे देश में इस तरह दाढ़ी और चोटी है।
लड़ा करती खटाखट जिस तरह कैरमकी गोटी है।
नरम हाँथोंकी है यह चाय जो कुछ हो मज़ा इसमें,
नही तो है न चीनी, साथ में मक्खन, न रोटी है।
कहा बीबीसे खाना झट बना दो भूख है गहरी,
कहा पहले जरा सुनलो—तराना यह झिझौटी है।
हुआ झगड़ा सबेरेसे कि हम पहने कि तुम पहनो,
परेशानी बहुत है एक ही घरमें लँगोटी है।
मुहब्बत है, शरारत है, अदा है, या कि क्या है यह,
कहो कुछ बात सीधी भी जबाब उनका चिकोटी है।
बहुत ही खूबसूरत है चमक भी है सफेदी भी,
मगर इतना समझ रक्खो हिमालयकी वह चोटी है।
कभी सुनते भी हैं तो कुछ समझते ही नही 'बेदब',
बहुत सीधे भी हैं, दुबले भी है, कुछ अक्ल मोटी है।

बिठाये बैठे हैं

खार क्यों आप खाये बैठे हैं,
फूल हम तो बिछाये बैठे हैं।

कांग्रेस राजमें जबरदस्ती,
वह मेरा दिल दबाये बैठे हैं।

यह सितम, यह गजब, यह बेदरदी,
सिरपे दुनियाँ उठाये बैठे हैं।

दिल ही होता तो कुछ गनीमत थी,
वह मुझीको चुराये बैठे हैं।

खाके होटलसे वह गये झटसे,
और हम शर्म खाये बैठे हैं।

यह जमाना तो है नुमाइशका,
आप क्यों मुँह छिपाये बैठे हैं।

उनकी धुन है कि हम न आयेंगे,
हम भी धूनी रमाये बैठे हैं।

आपने ही बिगाड़ की मुझसे,
आप ही मुँह बनाये बैठे हैं।

वह चलें चाल कितनी है 'बेढब',
हम तो दिलमें बिठाये बैठे हैं।

पतलून पहनता हूँ मैं

उनके घरके सामने जिस दम पहुँच जाता हूँ मैं,
दंड बैठक और कसरत करके दिखलाता हूँ मैं।
चलती है तलवारसे भी तेजतर उनकी जबाँ,
हजरते चर्चिलसे भी बढ़कर उन्हें पाता हूँ मैं।
यादमें फूटा है चशमा आँसुओंका आँखसे,
अब तो वाटर-वर्क्ससे हो आँख बनवाता हूँ मै।
जागता रहता हूँ जब-तक सामने तस्वीर है,
नींदमें बस नाम ले ले करके बर्राता हूँ मैं।
गोलियाँ बन्दूककी खानेकी तो हिम्मत नहीं,
गोलियाँ पाचककी लेकिन शामको खाता हूँ मैं।
केश रञ्जन तेल मैंने भेंटमें उनको दिया,
अपने फँसनेके लिए खुद जाल बुनवाता हूँ मैं।
वह गरजते हैं यहाँपर दिलमें उठती है चमक,
आँख बदली है उधर और मेह बरसाता हूँ मैं।
खूनका कतरा निकल आँखोंमें आँसू बन गया,
उनकी खातिर लालको मोती बना लाता हूँ मैं।

अब जुदाईकी घड़ीमें यादमें रोता नहीं,
दर्द सारा बह न जाये इससे घबराता हूँ मै।
कार्डपर साड़ी न एकलाई न वायल ही मिला,
अपनी उतरी उनको बस पतलून पहनाता हूँ मैं।
जिसका जी हो जो कहे मैं अपनी धुनमें मस्त हूँ,
एक मेरा राग 'बेढब' बस वही गाता हूँ मै।

हमें आजाद मत करना

यह कहते हो कि बातें तुम पुरानी याद मत करना,
मुझे मन्जूर है, तुम भी मगर बेदाद मत करना।
धुली है लक्स साबुनसे मलाईसे पली है यह,
मेरे मरनेपे तुम मिट्टी मेरी बरबाद मत करना।
लजाधुरसे भी नाजुक है यह मक्खनसे मलायम है,
मेरे दिलको मुसीबत डाके तुम फौलाद मत करना।
न आयेगी नजाकत लखनऊकी फिर तो बातोंमें,
मेरी सरकार तुम दफ्तर इलाहाबाद मत करना।
लगा कर दिल पढाये जो नहीं उसकी पढाई क्या,
किसी बेदिलको सुन लो तुम कभी उस्ताद मत कहना।
जहाँकी हैं जमीं सरसब्ज गंगाजीका पानी है,
उसे वीरान कर फारसका तुम बगदाद मत करना।
जलाते हैं, नया हर रोज हमपर जुल्म ढाते हैं,
सितम उसपर यह कहते हैं कि कुछ फरियाद मत करना।
मजा हमको कुछ ऐसा आ गया है कैदखानेका,
हमीं कहने लगे 'बेदब' हमें आजाद मत करना।

शैर अकबर

लगा करफ़ू, न बाहर लोग अब डरसे निकलते हैं,
न मैं घरसे निकलता हूँ न वह घरसे निकलते हैं।
चढ़ी आँखें लिये वह घूमते हैं हर तरफ ऐसे,
कि जैसे खाकसारोंके चढ़े फरसे निकलते हैं!
बड़े हैं आप इतने और बातें आपकी ऐसी,
नअज्जुब कुछ नहीं, घोघें समुन्दरसे निकलते हैं।
नहीं उजला है रँग अपना तो उजली क्यों मिले चीनी,
हमारे काम सारे सिर्फ शक्करसे निकलते हैं।
घड़ा, बोतल, सुराही, जाम, सब टूटे पड़े बिखरे,
बहुत मायूस मयखानेके वह दरसे निकलते हैं।
मेहरबानी नहीं जल्दीसे देबी-देवता करते,
समझते क्या नहीं, यह लोग पत्थरसे निकलते हैं।
समझकर पाँव रखना प्रेमकी गलियाँ नहीं सीधी,
बहुत मुश्किलसे इसके लोग चक्करसे निकलते हैं।
हुमायूँ सा मिला दिल और बाबरसी मिली हिम्मत,
जबाँ 'बेढब' मिली है शेर अकबरसे निकलते हैं।

काशी में

चली आओ रहो अब तो मेरी सरकार काशीमें,
मजा इस पार लो, खाओ हवा उस पार काशीमें।

मनुसपलटी यहाँकी सारी दुनियाँसे निराली है,
जिधर देखो उधर सड़कोंपे है कतवार काशीमें।

मिलेंगे भूत-प्रेतोंके चचा भी इस जगह सबको,
लगा आठो पहर शंकरका है दरबार काशीमें।

दबाकर दुम दबक जाते हैं छुपकर आज गलियोंमें,
चलाते थे सड़कपर जो कभी तलवार काशीमें।

यहाँ रेशमकी झीनी-झीनी साड़ी कौनसी कम थी,
नजर आने लगे अब मखमली सलवार काशीमें।

कभी मंडनका तोता बोलता था वेदकी बानी,
है अब भी शेर-भालू छापते अखबार काशीमें।

न पाओगे मजा काशीका दुनियाँमें कहीं 'बेदब',
अरे आओ यहीं पाओगे तुम संसार काशीमें।

बनबिलाव से

मुमकिन नहीं कि दें वह तुम्हें कुछ झुकावसे,
मिलता है कुछ कभी तो हमेशा दबावसे।

तैयार मैं हूँ लेनेको लन्दनका माल भी,
बेचें जो मेरे हाथ तिलोचनके भावसे।

आनन्द उठाना हो तो छोड़ो क-ख-ग-घ,
उलफत जताओ खोलके दिल मीम-वावसे।

दो दो छँटाक खाके चलाते हैं काम वह,
जलपान सिर्फ करते थे जो चार पावसे।

बोलीं वह प्रेम आपसे करती तो मैं जरूर,
लगते हैं आप मुझको मगर बनबिलावसे।

बंडाके बलपे उनसे तो मुमकिन नहीं है मेल,
शायद झुकें वह आपकी जानिब पुलावसे।

'बेदब' दवा करूँ जो कहीं एक चोट हो,
हैराँ हूँ आँख, दिल व कलेजेके घावसे।

कमाने लगा हूं मैं

जन्नत का कुछ मजा यहीं पाने लगा हूं मैं।
उनके यहाँ कभी कभी जाने लगा हूं मैं।
हर रोज मूँछ साफ कराने लगा हूँ मैं,
अपनेको फिर जवान बनाने लगा हूँ मैं।
सन्डेको जबसे आप बुलाने लगे मुझे,
हफ्तेमें एक रोज नहाने लगा हूं मैं।
गानेका उनको शौक है, जबसे पता चला,
तबला खरीद करके बजाने लगा हूं मैं।
चुड़ीका हो गया हूँ मैं मेम्बर किसी तरह,
अब खूब सफाईसे कमाने लगा हूं मैं।
आयीं हैं मेरे घरमें बड़ी आँख वह लिये,
अब दोस्तोंसे आँख बचाने लगा हूँ मैं।
दुनियामें मेरी जब न कहीं पूछ कुछ हुई,
टीचर बना हूँ और पढ़ाने लगा हूं मैं।
उनका किसी तरहसे नहीं नाज उठ सका,
बोझा अब अपने सर पे उठाने लगा हूं मैं।

हूर यहीं है

पंडित जी बताते हैं मुझे, स्वर्ग कहीं है,
मेरे लिए तो वह हैं जहाँ, स्वर्ग वहीं है।
वह कहते हैं फ़ुरसत नहीं है इन दिनों मुझको,
अफ़सोस मुझे बादमें छुट्टी भी नहीं है।
सुनता हूँ बहुत चुस्त है खुफिया पुलिस उनकी,
क्या यह वह बता देंगे मेरा दिल भी कहीं है।
बिल्लीकी तरह आँख दिखाते हैं वह मुझको,
चूहा वह समझ लें मुझे परवाह नहीं है।
कल शामको एक फिल्ममें सूरत नजर आयी,
वाइजको पता ही नहीं है, हूर यहीं है।
घर उनके पुकारा तो वह बाहर नहीं आये।
नौकरसे कहा देख लो 'बेढब' तो नहीं है।

सूई लगा रहा है

पच्छिम कोई तो कोई पूरबको जा रहा है,
हर एक अपनी-अपनी खिचड़ी पका रहा है।
साकीने पीने वालोंपर वह किया है जादू,
प्यालेमें कुछ नहीं है लेकिन पिला रहा है।
चूल्हा जले न हफ्तों चाहे किसीके घरमें,
हर एक जबां मुहब्बतमें दिल जला रहा है।
आया है खत मसूरीसे है लिखा यह उसमें,
गुरुकुलका ब्रह्मचारी होटल चला रहा है।
देशोंमें हो रहा है आरंभ प्रेम शायद,
बारूदका धुआंसा उठता दिखा रहा है।
साड़ीकी गोटमें है तनखाह लग गयी सब,
पैवन्द कोटमें अब दरजी लगा रहा है।
दिल प्रेममें फटा है, कहते हैं लोग टी० बी०,
सीनेको डाक्टर अब सूई लगा रहा है।
दुनियामें प्रेमका है सब ओर बोल बाला,
हर एक प्रेमका ही अब गीत गा रहा है।
चलती है तेज दुनिया, सब तेज चल रहे हैं,
है चाल प्रेममें भी, प्रियतम सिखा रहा है।
'बेढब' कहाँ मुहब्बतके दिन गये पुराने,
अब याद करके उनका दिल छटपटा रहा है।

बात बनाते

प्लेटोंपे प्लेट आयी उड़ाते चले गये,
हम पाँव धो रहे थे वह खाते चले गये।
हम दिलका दर्द उनको सुनाते चले गये,
वह प्रेमियोंके नाम गिनाते चले गये।
बरसातकी दावतमें उठे खाके लोग जब,
देखा कि कितने जूते व छाते चले गये।
उनसे कहा कि मुझपे भी होजाय एक नजर,
हँसके मुझे अंगूठा दिखाते चले गये।
हैं देखनेमें हल्के तो वह फूलकी तरह,
पर हमको हर तरहसे दबाते चले गये।
'बेदब' उन्हें न कम किसी लीडरसे जानिये,
आये यहाँ व बात बनाते चले गये।

मुहब्बतकी निशानी

उन्हें आज आयी है कैसी जवानी,
सभी कह रहे हैं उन्हींकी कहानी।
लचकदार कानून उनके नहीं हैं,
घनी है यह जेबी घड़ोकी कमानी।
नहीं दूध पीनेको मिलता अगर हो,
तो कलका तो मिलता है पीनेको पानी।
सभी कुछ निछावर किया उनपे मैंने,
उन्होंने जो तारीफ मेरी बखानी।
हुए छेद हैं फेफड़ेमें हजारों,
यही है मुहब्बतकी बेदब निशानी।

तिकड़म

जिस तरह पहिया बिना है रामका डमटम नहीं,
तुम नहीं जब साथ मेरे चीज कुछ भी हम नहीं।

हुक्म है सरकारका हो बन्द ठर्रेका चलन,
बन्द होगी ब्रांडी व्हिस्की, बियर या रम नहीं।

देखता हूँ उनके मुँहकी ओर जब मै देर तक,
कहते हैं – चेहरा मेरा अखबारका कालम नहीं।

तान अब लेने लगे गदहे भी देखो दूनकी,
बन गये उस्तादजी हैं जानते सरगम नहीं।

पटके बरजा तीनतक वह बन गये साहित्यकार,
और मम्मटसे वह अपनेको समझते कम नहीं।

पत्ती पत्ती रो रही है सुबहको हर बागमें,
कौन दुनियामें जगह है जिस जगह मातम नहीं।

आप क्यो ललकारते हैं हार मैं हूँ मानता,
दालदा खाकर लदा है रोग, कुछ भी दम नहीं।

वाह क्या ईमान है चाहो जिधर झुक जाय वह,
जिस तरह कालर बना हो और हो बकरम नहीं।

क्यो किसी भी लाभकी उम्मीद 'बेदब' हो भला,
जानते कुछ आप दुनियामें अगर तिकड़म नहीं।

खैरानी

न पानी बन्द होता है, न छाता है न बरसाती,
कमर तक जल सड़क पर है, वहाँ कश्ती नहीं जाती।
न लड़की हैं, न लड़के हैं, मगर है शौक लड़नेका,
शिखंडी आजकल बनने लगे अर्जुनके है नाती।
बहुत कुछ सोचकर जाता हूँ कहनेके लिये लेकिन,
जब आंखे चार होती हैं न मुँहमें बात है आती।
उन्होंने मरकहा एक साँड़ दरवाजेपे बाँधा है,
पहुँच पाऊँ न मैं इस वास्ते की है यह तैनाती।
कभी चितवनका खंजर है कभी है जाल बालोंका,
खुदा जाने मिटेंगे कब जहाँसे यह खुराफाती।
सनीचरसे अमंगल कर रहे थे जो अभी कल तक,
बधाई दे रहे है आज सुकरू औ जुमेराती।
सभाओं, मीटिंगोंमें, बैठकर दुनियाकी महिलाएँ,
यही कहती है 'अपनेको अगर मै मर्द कर पाती'।
तुम्हारा प्रेम महँगा है नहीं मैं मोल ले सकता,
दुआ दूँगा अगर मिल जाय मुझको भीख खैराती।
फटी दीवार, छत टूटी, घिरे बादल, यह आये हैं,
यही है रामधुन मेरी कि मेरी जान बच जाती।
जो हैं आजाद वह तो हम भी हैं आजाद ए 'बेढब',
जरा देखेंगे हम भी कैसे अंग्रेजी नहीं जाती।

मिनिस्टरके साथ

करके वादा भी वह न आये थे,
मैंने बोरे यहाँ बिछाये थे।
उनके जलपानके लिये थोड़े,
आज मैंने चने भुनाये थे।
ऊँट भी भागने लगे सुनकर,
गीत ऐसे उन्होंने गाये थे।
पूछते हो कि रो रहे हो क्यों,
काले बादल उधर जो छाये थे।
कैसे पहचानते भला मुझको,
वह मिनिस्टरके साथ आये थे।
आज वह हो गये मेरे मालिक,
जिनसे जूते कभी सिलाये थे।
हो गया अस्पताल घर उनका,
कितने रोगी वहाँपे आये थे।
उनको भगवानका मिला दरजा,
सबकी आँखोंमें वह समाये थे।
सुबह तक रोशनी रही उनकी,
शामको मेरे घर वह आये थे।
मरते हैं तो बुरा नहीं 'बेदब',
मरनेको हम यहाँपर आये थे।

चपकपर चपक

जमानेकी हवाको देखकर जो हैं नहीं चलने,
गगनके पेड़ उनके बागमें हैं फूलते फलते।
नहीं रेलोंके डब्बोंमें अगर है रोशनी जलती,
तो घरसे लोग लेकर लालटेनें क्यों नहीं चलते।
वह दोमें एक होंगे, कवि बड़े या घोर प्रेमी हों,
शरीर ऐसा है जैसे लोग टी. बी. रोगमें गलते।
कोई मंत्री बना है, मंत्रिमंडलमें घुसा कोई,
नहीं लैसंस भी हमको मिला हम हाथ हैं मलते।
उधर दो सेरका गेहूँ व आधा पावका घी है,
इधर मेहमान ऐसे हैं कि कहनेसे नहीं टलते।
मेरा दिल भूनते हैं प्रेमकी वह आगमें ऐसे,
तवेपर जिस तरह आलूके चिप होटलमें हैं तलते।
चुगाता हूँ सवेरे शाम आँसूके उन्हें मोती,
इसीसे हंस मानसमें हमारे प्रेमके पलते।
दिलोंकी चोर बाज़ारी उन्होंने जिन्दगी भर की,
कभी इनको, कभी उनको, रहे बस वह सदा छलते।
लगादी रोक कलवरियापर अब सरकारने 'बेढब',
न आयेंगे वह दिन फिर जब चपकपर थे चषक ढलते।

नालीकी

जब नजर आती है सूरत किसी मतवालीकी,
भक्त बन करके मैं कहता हूं कि जै कालीकी।

खूब आनन्द उठाता हूँ मैं मेम्बर बनकर,
मुझको लोगोंकी न परवाह है कुछ गालीकी।

रच रहे आप हैं साहित्य नया, क्या कहना,
गीतका रूप है धुन उसमें है कव्वालीकी।

टेककी राहपर उनकी नहीं बस चल सकता,
जिस तरह टेक कड़ी हो किसी हड़तालीकी।

प्लेट चीनीकी अगर हो तो बहुत इज्जत है,
पूछ कुछ भी नहीं चाँदीकी मगर थालीकी।

नर्कवालोंको भली खूब लगै बैतरनी,
देख लें शक्ल जो काशीकी कभी नालीकी।

मिल गया लिखनेको है खूब मसाला 'बेदब'
मुझको चिट्ठी जो मिली आज मेरी सालीकी।

सावनके महीनेमें

जो सच पूछो तो उनको ही मजा आता है जीनेमें,
जो हैं माड़ी पै करते खत्म जो पाते महीनेमें।
अरे पंडित यही तो भेद तुममें और मुझमें है,
तुम्हें आनन्द खानेमें मुझे आनन्द पीनेमें।
न खायी चोट आँखोंकी, सुधा भी पी न ओठोंकी,
हुआ बरबाद जीवन, मैं न मरनेमें न जीनेमें।
न जलकर बाद मरनेके भी वह ठंडा कभी होगा,
जला करता है जो इस जिन्दगी में रोज कीनेमें।
चमक कर वह गयीं बरसात में अपने पिताके घर,
गिरी बिजली हमारे घर पै सावनके महीनेमें।
धधकती जोरसे है पीके यह आँसूका पानी भी,
छिपी है कौनसी यह आग 'बेदब' मेरे सीनेमें!

चाल बेढब

रंग बिगड़े हैं चाल बेढब है,
अब पढ़ाईका हाल बेढब है।
हैं फिसलते निगाहके चप्पल,
उनके चेहरेकी खाल बेढब है।
'क्यों बुलाते हैं आप घर अपने',
उनका कैसा सवाल बेढब है।
मात गंगाकी बाढ़ हैं होती,
बन गयी आज दाल बेढब है।
कह दिया—है गुलाब तुम जैसा,
इससे उनको मलाल बेढब है।
उनके आने पे फेल हो बिजली,
दिलमें मेरे खयाल बेढब है।
गले मिलते ही पर्स थी गायब,
उनमें कैसा कमाल बेढब है।
बापको है सिखा रहा बेटा,
तेज कैसो यह चाल बेढब है।

बातके तारमें फँसा हूँ ,
हवाका एक जाल बेढब है।
एक चांटा जमा दिया सिर पर ,
और बोले कि ताल बेढब है।
खून पी-पीके जी रहा है वह ,
हमको करता हलाल बेढब है।
दिलमें रखो तो बैठ जाता है ,
बोझ उनका वबाल बेढब है।
बीस बरसोंसे कह रही है वह ,
उम्र बस बीस साल बेढब है।
आज मुँह मत छिपाइये मुझसे ,
मुट्ठियोंमें गुलाल बेढब है।

मरहम हैं

नया गल्लेका राशन है बनस्पति खा रहे हम हैं,
बतायें कौन कारण देशवासी आज बेदम हैं।

बड़ी है बेकली क्यों फूलसे मुरझा रहे हम हैं,
मिलेंगे फल तनिक ठहरो लगे कुछ पेड़ क्या कम हैं।

मेरी बातों को सुनकर वह मरम्मत बेतरह करते,
मगर है खैरियत वह जानते हिंदी बहुत कम हैं।

बहुत कोशिश उन्होनेकी मियां वह बन नहीं पाये,
इसीसे मस्त होकर घूमते वह रोज बे गम हैं।

करैला हैं न हैं लौआ, कबूतर हैं, न हैं कौआ,
समझते हैं मगर दुनियाँमें जो कुछ हैं हमीं हम हैं।

न करते काम कुछ हों किंतु हैं वह देशके सेवक,
छपाते नित्य वह संदेश तो दो चार कालम हैं।

हमारी बाँहमें भी शक्ति है अर्जुनके बाँहोंकी,
सबेरे आध घंटा खेलते हम रोज कैरम हैं।

हमारे देशके नेता सभी हैं इस समय लकड़ी,
बहुतमे चीड़ हैं, कुछ आम हैं दो एक शीशम हैं।

सनीचरकी सुना है है लगी कश्मीरपर आँखें,
नहीं क्या देशकी खानोंमें मिलने आज नीलम है।

वह दिलमें आग लेकर बोलते हैं, बोलते हैं जब,
नहीं वह आदमी हैं मैं समझता हूँ कि चीलम हैं।
उन्होंने इस तरह देखा, तुरत मर हम गये होते,
मगर मैंने तो यह देखा कि 'बेदब' वह तो मरहम हैं।

तंदूर से

दूर रहिये बाज आया आपके इस नूर से,
रखके दाढ़ी बन गये हैं आप तो लंगूरसे।

आप दाढ़ीपर फ़िदा हैं, लोग मुड़वातें हैं मूँछ,
साफ चेहरा करके बनजाते हैं अब वह हूरसे।

जानता हूँ आप भारतके बड़े ही मित्र हैं,
आपसे डरता हूँ मिलिये आप मुझसे दूरसे।

बात कुछ सुनते नहीं, डर है न गिर जाये कहीं,
लड़खड़ाते जा रहें हैं, वह नशेमें चूरसे।

जबसे वह नेता हुए चेहरा है फूला इस तरह,
रोटियाँ निकली हो ताजा जिस तरह तंदूरसे।

पूस आता है

बलासे अमरिका आता है अथवा रुस आता है,
हमें जाड़ेका कपड़ा चाहिये अब पूस आता है।

बहुत ओढ़े दुशाले आज तक कश्मीरके हमने,
मगर अब देखना होगा कहाँसे तूस आता है।

न गेहूँ, जौ, चना राशनकी दूकानोंसे है मिलता,
कभी कुछ घास आती है कभी कुछ फूस आता है।

पुलिससे मिल गयी पेन्शन, नया अब काम है उसका,
बहुत कुछ रेलके डब्बोंसे जाकर मूस आता है।

समझते है वह, सब सम्मान करते हैं बहुत मेरा,
मगर दुनियाँ समझती है कि यह मनहूस आता है।

गया था बम्बई इस धुनमें नरगिस पाँव दाबेगी,
मगर वह लात खाकर लौटकर मायूस आता है।

जो सेरो पूरियाँ खाकर मलाई सेरभर खाते,
उन्हें दोचार चम्मच मूँगका अब जूस आता है।

न घबराता कभी हूँ—शेर, भालू और चीतेसे,
दहल जाता है दिल जब सामने कंजूस आता है।

जमानेने बड़ाईकी बदल दी 'आज परिभाषा,
बड़ा 'बेढब' वही जो खूब खाकर घूस आता है।

कुँआर में

इस उम्रमें लगे हुए हैं वह सिंगारमें,
फागुन बुला रहे हैं वह देखो कुँआरमें।

अच्छीसी कार हो तो तुम्हें साथ लेचलें,
लगता है शाक जोरका इस जीप कारमें।

सीधी हुई न आँख तनिक उनकी आजतक,
उलटा यहाँपे टाट है उनके दुलारमें।

कुछ चाटनेकी चीज वहाँपर जरूर है,
हैं घुसरहे जो लोग असेम्बलीके द्वारमें।

बीमार होनेपर ही वह आते हैं देखने,
मै तो पड़ा रहूँगा हमेशा बुखारमें।

करनी अगर है नीच तो तुम नीच हो सदा,
मैदानमें रहो कि रहो तुम पठारमें।

देखो उधर समझके अलकका यह जाल है,
निकलोगे फिर नहीं जो फँसे इस सिवारमें।

लड़नेमें साथ उनके ही आता है बस मज़ा,
जीते अगर तो मौज है, आनंद हार में।

काशीकी धूलने तुम्हें 'बेदब' बना दिया,
शंकरका है भभूत यहाँके गुबार में।

शमाके साथ परवाने

निराले ढगसे वह छिपके मेरे दिलमें रहते हैं,
कि जैसे रोशनीमें दिनकी चूहे बिलमें रहते हैं।

तअज्जुब कुछ नहीं होता गला जब रेतते हैं वह,
सुबहसे शामतक जब देखिये फाइल'-में रहते हैं।

उड़ाते खूब गुलछर्रे हैं हम पहलीसे पन्द्रह तक,
न पूछो आखिरी हफ्तेमें किस मुशकिलमें रहते हैं।

जो नेता हैं तो उनके साथ हैं दस-बीस दरबारी,
शमाके साथ परवाने सदा महफिलमें रहते हैं।

न ठहरे, छोड़कर गिरजाको भागे हजरते ईसा,
बड़े आरामसे वह आजकल बाइबिलमें रहते हैं।

न पाया हो किसीने पालिया भगवानको मैंने,
वह हर सिनेमा भवनकी ऊपरी मंजिलमें रहते हैं।

सितारे जिस जगह सिनेमाके रेंटर हैं बने रहते,
वहीं पर घूमते वह रात दिन सरकिलमें रहते हैं।

बहुतसे लोग कहते हैं कि नीची बुद्धि है उनकी,
जो गरमीके दिनोंमें प्लेनसे जा हिलमें रहते हैं।

इसीको जिंदगीका हम मज़ा कहते हैं ए बेदब',
कभी दरियामें रहते हैं कभी साहिलमें रहते हैं।

इज्जत बढ़ादीं

नहीं पास मेरे रहे अब इलाके,
भला तुमको रखूँगा कैसे जिलाके।

तुम्हारी जमानेमें इज्जत बढ़ा दी,
तुम्हें घूमकर वोट मैंने दिलाके।

बसाने चले हैं नयी एक दुनियाँ,
वह मिट्टीमें दुनियाँ पुरानी मिलाके।

न तैयार थे बात वह माननेको,
मनाया उन्हें मैंने ह्विस्की पिलाके।

नहीं है कमेटी नहीं है वह जलसा,
विदाई न हो जिसमें दावत खिलाके।

सरल है, बड़ा आदमी आज बनना,
पहन लो जरा सूट बढ़िया सिलाके।

'नहीं' कह रहे हैं, कि 'हाँ' कह रहे हैं,
दिये मुसकरा सिर वह अपना हिलाके।

प्रेम में टी. बी.

पेच खाए हुए जो सिर पे हैं, बाल अच्छा है,
हम गरीबोंको फँसानेका यह जाल अच्छा है।

पढ़के क्या होगा, पढ़ेंगे नहीं, नेता होंगे,
नौजवानोंका यह ऊँचा सा खयाल अच्छा है।

इस नये युगमें नयी हमने बनाई हिन्दी,
भात कहत हैं कि अच्छी है, व दाल अच्छा है।

उनकी तनखाह महीनेमें है दो सौ रुपये,
बंकमें लाखका टोटल है कमाल अच्छा है।

मुझको तो प्रेममें टी० बी० हुई परवाह नहीं,
आप योहीं जो घुले कौन सा हाल अच्छा है।

ख़त यह आया है वह आयेंगे मिलेंगें मुझसे,
ज्योतिषीने भी कहा है कि यह साल अच्छा है।

ब्लाउजकी भाँति लगे शर्ट पहनने लड़के,
लोग कहते हैं कि 'बेढब' यह जमाल अच्छा है।

निशानी नहीं हैं

मेरे पास उनकी निशानी नहीं है,
तभी जिन्दगीमें रवानी नहीं है।
अजब होरही है घड़ी जिन्दगीकी,
चलानेकी कोई कमानी नहीं है।
हँसे सुनके मेरी मुहब्बतकी बातें,
कहा इससे सुन्दर कहानी नहीं है।
रहा एक दिल दे दिया वह भी मैंने,
न कहना कि दुनियाँमें दानी नहीं है।
लगे मुझसे ईमानकी बात करने,
और इस पर भी कहते हैं छानी नहीं है।
इधर देखो जब, बंद एक आँख करलो,
कभी तुमने बन्दूक तानी नहीं है।
वह लट्टू समझकर नचाते हैं मुझको,
लड़कपन है उनका जवानी नहीं है।
बनी कामरेडा पहन लाल कपड़े,
वह साड़ी तरहदार धानी नहीं है।

वहाँ पर मिली चाय, काफी, बराँडी,
मगर एक चिल्लू भी पानी नहीं है।
मुहब्बतकी बातें लिखी खतमें उनको,
मेरा प्रेम 'बेदम' जबानी नहीं है?

साहित्य-सेवा

जमानेसे अलग हैं वह न उनका कोई सानी है,
हजारों सालकी तसवीर यह जैसे पुरानी है।

मिला जो प्रेमका उपहार उसको वह न भूलेंगे,
पड़ा जो कानपर चप्पल अभी उसकी निशानी है।

बिना डर आगसे खेले, जले फिर जलके फिर खेले,
इसीका नाम दिलवालोंकी भाषामें जवानी है।

फुलाकर मुँह जो बैठे हैं नहीं कुछ बोलते सुनते,
अजब ठडी लड़ाई आपने मुझसे यह ठानी है।

कटिंग है पेपरोंकी चिट्टियाँ कुछ हैं तकाजोंकी,
यही साहित्य सेवाकी बची 'बेढब' निशानी है।

शरबते दीदार

बड़ा है वह जमानेमें जिसे घर-बार काफी है,
जिसे है पास-बुक या पासमें कलदार काफी है।
नहीं कुछ और इच्छा, देख लो मीठी निगाहोंसे,
न लाओ चाय मुझको शरबते दीदार काफी है।
उसे भिजवाइये मत जेल, वह है प्रेमका पागल,
अभी उस दिन सड़कपर जोपड़ी वह मार काफी है।
नहीं संतोष दुनियाँसे चले वह चाँदको लेने,
रहो तुम सामने, मुझको यही संसार काफी है।
मुझे चेक और नोटोंकी नहीं है चाह दुनियाँमें,
छपा हो नाम जिसमें बस वही अखबार काफी है।
प्रवालोंसे तुम्हारे लाल होठोंमें जो है टानिक,
इसीका रस हमारे वास्ते उपचार काफी है।
जिसे चाहें समय दें आप जितना, आप हैं मालिक,
मुझे जब आप खाली हों मिनट दो-चार काफी है।
नहीं मालूम मुझको, लोग क्यों हैं आपसे मिलते,
मुझे तो देख लेना आपका सरकार काफी है।
हैं उनके पास नाखुन, दाँतहै, चप्पल है पाँवोंमें,
किसीको पस्त करनेके लिये हथियार काफी है।
भला किसमत कहाँ इनकी बगलमें आपके बैठें,
बना लेते अगर 'बेढब' को चौकीदार काफी है।

सितम

सितम यह आप हम पर ढा रहे हैं,
अभी आये अभी फिर जा रहे हैं।

उधर काले जो बादल छा रहे हैं,
मेरी आँखोंसे मेंह बरसा रहे हैं।

किये वादों पै वादे जा रहे हैं,
मुझे क्यों आप यों बहका रहे हैं।

वह तबला इसको समझे जा रहे हैं,
हम अपनी खोपड़ी सहला रहे हैं।

हमारी बात भी सुन लीजिये कुछ,
सुनूँगा आप जो फरमा रहे हैं।

ललाई आ रही है उनके मेंह पर,
मलाई आजकल वह खा रहे हैं।

चुराया है हमारा दिल उन्होंने,
इसीसे दिलमें वह शरमा रहे हैं।

घटा है आसमांमें आज जबसे,
बढ़ा है दर्द वह तड़पा रहे हैं।

जनानी आगयी है आदतें कुछ,
मुड़ाकर मूंछ वह शरमा रहे हैं।

मिलाया पूरबो पच्छिम उन्होंने,
मटनके साथ बैंगन खा रहे हैं।
नहीं आता निशाना भी लगाने,
वह तिरछा तीर ताने आ रहे हैं।
चुराया तो हमारा दिल उन्होंने,
मगर वह दिलमें अब पछता रहे हैं।
गधे भी रेंक कर भागे वहाँ से,
वह गाना क्लासिकल जो गा रहे हैं।
जगह कोई न अच्छी और होगी,
हम आँखोंमें उन्हें टहला रहें हैं।
बड़े इंजीनियर है आप बनते,
यह टूटा दिल न जोड़ पा रहे हैं।
चले हैं सैर करने फूलकी हम,
चुभे पर दिलमें कांटे जा रहे हैं।
बटर है, टोस्ट है, है आमलेट भी,
कलेजा आप क्यों फिर खा रहे हैं।
वह हाकीसे सदा रहते हैं टेढ़े,
हमें शायद वह सीधा पा रहे हैं।

हजारों वोल्टेजकी उनमें ताकत,
जरा सा छू दिया तड़पा रहे हैं।
चलो छिप जांय, भागें घरके अन्दर,
वह चन्दा मांगने ही आ रहे हैं।
करेंगे घर 'हमारा वह उजाला,
न बिजली हम इसीसे ला रहे हैं।
लगायी है लिपिस्टिक आपने, या,
किसीका खून पीकर आ रहे हैं।
न आये हैं, न आयेंगे वह 'बेढब',
मगर हम हैं कि धोखा खा रहे है।

बँगलेपर आज उनके बहुत टीमटाम है,
एकशा' कहीं खुला है कहीं 'ओल्ड टाम' है।
डरते हुए जो जाके किया मैंनेभी सलाम,
बोले निकाल दो कि यह नेटिव गुलाम हैं।

आप कहते हैं, स्वदेशी 'थिंग' हो,
राज अपना और अपना 'किंग' हो।
कुछ दिनोमें आपकी होगी यह मांग,
'चर्च'-के स्थानपर शिवलिग हो।

बढ़ती जाती है रोज आपकी मांग,
दल स्वदेशीका है बहुत 'स्ट्रांग'।
जब यही हाल है तो कहियेगा,
छोड़ ह्विस्कीको लाट छानै भांग।

बाहर सभामें देखिये खद्दरका ठाट है,
घरमें मगर विलायती सब ठाट बाट है।
मिलते हैं चुपके चुपके गवर्नरसे लाटसे,
लेकचरमें मुँह-पे रहता सदा 'बायकाट' है।

भरा है झुर्रियोंसे मुँह गोया लतरी पुरानी है,
कमर टेढ़ी, नहीं हैं दाँत, पर दिलमें रवानी है।
करेंगे व्याह बच्ची दूध पीतीभी जो मिल जाये,
यही भारतके बूढ़ोंमें नयी बेढब जवानी है।

बरौनी है तुम्हारी गोखरूका या कि कांटा है,
गिरे मक्खनके ढोंके या लगाया तुमने चांटा है।
न जाने कौन 'बेढब' काट खाता है मेरे दिलमें,
तुम्हारी याद है या घुसके बैठा कोई माटा है।

वह 'इंगलिश गर्ल' क्वांरी है अभी पर 'एज'थट्टी है ,
बड़ी है भीड़ घरपर. घर है या काशीकी सट्टी है।
ढला है जिस्म उसका खुशनुमा सांचेमें ए 'बेदब',
खुदाके कारखानेकी नयी साबुनकी बट्टी है।

खद्दरको छोड़ उनका प्यारा बना है 'मसलिन',
कपड़ा बदनमें देशी गड़ता है जैसे हो 'पिन'।
मिहनतसे काम करना अपना नहीं सुहाता,
दफ्तरमें क्लर्क बनकर बैठे करेंगे भिनभिन।

निगाहें पेग है ह्विस्कीकी 'कलर' भी जैसे 'जसमिन' है,
बलाकी शोख, बी. ए. पास, उस पर 'एज' कमसिन है।
अगर देखें इसे योगी तो निश्चय ही फिसल जायें,
जो मेरा आगया दिल इसमें बेदब कौनसा 'सिन' है।

बहुत डर है कहीं दिलमें न कोई दर्द पैदा हो,
बिना सरजनसे पूछे कैसे उनपर कोई शैदा हो।
जरा 'हेल्थ-आफिसर' देखा करें 'शीरी लबों'- को भी
कहीं उनकी मिठाईमें न बोई 'जर्म' रहता हो।

क्रिशचियन मिस 'ब्लैक,' पर मगरूर है,
बाबुओंके वास्ते वह हूर है।
दाग चेचकके जो हैं रुखसारपर,
चेहरा गोया 'खानये जंबूर' है।

सुब्ह गुजरी दोस्तोंसे बातमें,
शामको टेनिस सिनेमा रातमें।
दिनको कालेजमें मिसेज 'बेढब' रहीं,
रह गये वह यों ही मुतफरकातमें।

उम्र गुजरी इस कदर कब अक्ल तुमको आयेगी,
चापलूसी कर चलो इज्जत यही दिलवायेगी।
ईश्वरके डरसे 'बेदब' है तुम्हें क्या फायदा,
तुम डरो हेडमास्टरसे कुछ तो 'पे' बढ़ जायेगी।

'लव' मेरा उनके लिये एक 'लोड' है,
आंख उनकी मेरा 'पीनल कोड' है।
दिलमें भर रखा है तुमने क्यों 'गुबार',
वह भी क्या काशीकी कोई 'रोड' है।

लिखके चिट्ठी उनसे 'ग्रीटिंग' कीजिये,
जब चलें स्कूल 'मीटिंग' कीजिये।
बाप उनके उनसे जो मिलने न दें,
उनके घरपर जाके 'पिकेटिंग' कीजिये।

इन हसीनोंका अजब 'स्टेट' है,
दिल लगाये जो वह मटिया मेट है।
कितनीं तसवीरें खिचीं औ मिट गयीं,
उनका दिल है या कोई स्लेट है।

मेरा दिल अपने बालोंके 'प्रिजन' में 'लाक' करते हो,
अगर मैं माँगता हूँ हँसके हमको 'माक' करते ही।
यह कहते हो कि जब छूटेगा फिर ऊधम मचायेगा,
भला यह कौन सी 'जस्टिस' है जिसकी 'टाक' करते हो।

'सोशलिस्टों' को नहीं है जिस तरह राजा पसंद,
जिस तरह बिस्कुटके आगे है नहीं खाजा पसंद।
'टेस्ट' में उनके भी सुनता हूँ हुआ है 'चेंज' अब,
आजकल अल्लामियांको है नहीं बाजा पसंद।

जिस जगह वह हों खड़े बस भीड़ उस 'स्पाट' है,
दिल नकद लेकर नहीं कुछ बोलते क्या ठाट है।
'साल्ट' युक्त कपोल, मीठे होठ, तुरशी आँखकी,
यारका चेहरा नहीं है, आगरेकी चाट है।

बाप जां तो साग खा मर गये,
पर हमारे वास्ते कुछ धर गये।
मूंछ मुड़वाकर पहन कर सूट-बूट,
नाम हमभी मिस्टरोंमें कर गये।

निरक्षर थीं वह पहले आजकल कालेजमें जाती हैं,
बनाती रोटियाँ थीं, 'फारम्यूला' अब लगाती हैं।
लगाती थीं कभी उबटन, वह रोज अब 'सोप' हैं घिसती,
अगर बैंगन थीं पहले आजकल वह नाशपाती हैं।

जिससे बँगले पर मिलें साहब वही इसान है,
जो न इंगलिश सूट पहने वह निरा हैवान है।
पूछ लो साहबसे 'बेढब' सांसभी लेना जो हो,
'ग्रेट' बननेकी यही तरकीब एक आसान है।

अपनी 'ब्यूटी' के नशेमें बेतरह वह चूर हैं,
यह समझते हैं कि हम जन्नतकी कोई हूर हैं।
जर्द चेहरा है बहुत 'बेढब' मँहासोसे भरा,
हम यह कहते हैं कि वह जँघईके मोतीचूर हैं।

हूकूमत आपकी हिंदोस्तांमें सबको प्यारी है,
शिकायत कुछ नहीं है एक बस बिनती हमारी है।
लगायें आँखपर भी फौजदारी का कोई 'सेकशन'
यह 'बेढब' 'मरडरर' है 'डेन्जर' भी इनसे भारी है।

घरके बाहर 'ग्रेट' हैं हम 'बास' हैं,
शान है बीबीभी बी. ए. पास हैं।
घरके भीतर हाल क्या बेढब कहूँ,
लात है, बीबी है, हम हैं, सास हैं।

'रेस' में लबके हमारी 'हेल्थ'-भी अब 'हाफ़' है,
मूँछका क्या हाल लिखूँ खोपड़ीभी साफ है।
देखता हूँ जब उन्हें तब दिलमें होता है 'ट्रेमर',
प्रेममें उनके हमारा 'हार्ट' 'सिसमोग्राफ' है।

हे प्रिये 'टेंपर' तुम्हारा 'हाट' है,
दिलमें क्यों मेरी तरफसे नाट' है।
क्यों जलाती हो हमारे दिलका घर,
तुम मुसलमाँ हो न यह कोहाट है।

आप 'फ्रीडम'–का गीत गाते हैं,
पर कुछ इसका पता लगाते हैं।
आप खाते हैं साग बथुआका,
वह 'चिकेन' और 'गोट' खाते हैं।

क्या कहूँ किससे कहूँ क्या हो गया,
क्या मिलेगा अब वह 'बेढब' जो गया।
कोई जाकर होम-मेम्बर से कहो,
इस बनारसमें मेरा दिल खो गया।

गलियोंमें घूमता है घर घरसे वापसी है,
बूटे हैं दाग़ दिलके रंगतसे बेकसी है।
रेजे हुए जिगरके है तार तार टूटा,
प्रेमीकी जिन्दगीभी साड़ी बनारसी है।

आँख नश्तर है तुम्हारी, होठ 'आइंटमिट' है,
'ब्लैक' तिल पिल है, पसीना 'प्योर' पीपरमिंट है।
डाक्टरके डाक्टर हो, साथ मेडिकल हाल है,
यह तो बोलो कुछ तुम्हारी फीसकी भी 'हिंट' है।

हम ब्लैक हैं बलासे व तुम ह्वाइट' ही सही,
आओग मेरे घरमें तो कुछ 'लाइट' ही सही।
कुछ छेड़ छाड़ चलती रहे तुमसे व मुझसे,
बोलो जरूर 'लव' न सही 'फाइट' ही सही।

लोग कहते हैं तुम तमाशा हो,
प्रेमियोंके हृदयकी आशा हो।
मीठी छोटी सफेद चिकनी से,
मैं तो कहता हूँ तुम बताशा हो।

श्रीमतीजी गल्प लिखने लग गयीं,
खोजमें 'कैरेक्टर'-के पग गयीं।
कल जो लौटे घूम कर श्रीमानजी
घरसे देखा श्रीमतीजी भग गयीं।

मेरे हाथो कुछ नहीं तो पानही खाया करो,
मुँह लगो इतना न सबसे कुछ तो शरमाया करो।
थोड़ी जो छुट्टी मिले 'संडे'-को आ जाना जरा,
कौन कहता है कि घरपर रोज तुम आया करो।

दिल मेरा टूट गया प्रेमके झकझोरोंसे,
गैर मुमकिन है बचाना उसे अब चोरों से।
उनसे कहिये तो दिलाते हैं वह आँखें मुझको,
चैन दुनियांमें मिलेगी न कभी गोरोंसे।

शक्ल यह मिसकी है रोशन या कि 'किटसन' लंप है,
चालकी अठखेलियाँ हैं या वह करती 'जंप' है।
जब वह चलती है तो दिल क्या काँप जाती है जमीन,
मिस है यह या जनवरी चौंतीसका भूकम्प है।

एक दिन मुझसे मेरा हज्जाम यों कहने लगा,
आप सब बातोंमें मेरी कहते हैं क्यों 'हाँ' सदा।
मैंने उससे कह दिया आसान है इसका जवाब;
है मेरी कमजोर गरदन पर तुम्हारा उस्तरा।

उन्हें दुनिया से क्या यतलब मिनिस्टरके जो बंदे हैं,
कहीं वह आगये तो पार्टी औ खूब चंदे हैं।
किसी स्कूल विद्यालय का 'डिपुटेशन' जो ले जाओ,
तो कहते हैं कि भाई अजकल व्यापार मंदे हैं।

रूपये मिलें तो कुछ नहीं दुनियाँमें पाप है ,
लड़कीके 'सेल' के लिए तैयार बाप है।
जीते हों मरते हों जो बस एक धनके वास्ते ,
बेकार उनके सामने सारा विलाप है।

देश सेवा करनी हो खद्दर का कपड़ा बेचिये ,
हो कमाना धन अगर योरपमें चमड़ा बेचिये।
बेचिये कपड़े विदेशी लूटना हो देशको ,
पासहों एम्. ए. अगर तो आप खपड़ा बेचिये।

वादोंका तुम्हारे मुझे विश्वास नही हैं ,
क्या 'वेट' करूँ कोई मुझे आस नहीं है।
कहिये तो कोई 'आरटिकिल' आपपे लिख दूँ ,
कुछ इसके सिवा और मेरे पास नहीं हैं।

हो बनारस देखना तो नवपटैया देखिये,
रामलीला देखनी हो नककटैया देखिये।
देखनी हो शान भारतकी औ इंगलिस्तानकी,
कौंच वायसरायकी मेरी चटैया देखिये।

जिधर देखो उधर ही चंदा है,
बड़ा हैरान इससे बंदा है।
जिधर जाओ उधर खुरचते हैं,
यह सोसाइटी नहीं है, रंदा है।

जमानेको लगे यह बात अच्छी या लगे भद्दी,
जिसे है प्रेम सच्चा सारी दुनियां है उसे भद्दी।
लिखेंगे सोनेके हर्फोंमें लिखनेवाले 'हिस्ट्री' के,
मिसेज सिमसनके 'लव' में छोड़ दी 'एडवर्ड'-ने गद्दी

यह खबर जब से छपी काशीके दैनिक 'आज'-में ,
लाटसाहबकी बड़ी श्रद्धा है बुल महाराजमें ।
सांड़ काशीके बहुत खुश होगये यह जानकर ,
कद्र होगी अब हमारी 'बाइसरीगल खाज' में ।

हैं जो आखें उनकी ईंजन दिल हमारा रेल है ,
खींचते जाते हैं हमको क्या ही 'बेढब' खेल है ।
जब में कहता हूँ करो आजाद तब कहते हैं वह ,
है 'तेरा' 'आफ़ैंस' 'लव' का जो 'विदाउट-बेल' है ।

एम ए. हुआ तो समझा कि मै 'ग्रेट' होगया ,
'ला' पासकरके और अजब 'फेट' होगया ।
घर घरकी खाक छानके बी. टी. किया जो पास ,
सुनते हैं साठ बीटियों का रेट होगया ।

चंदोंसे खाली जब मेरा पाकेट होगया,
बंदा भी आनरेरी मजिष्ट्रेट होगया।

लेकरके कर्ज 'कार' मंगायी सिलाये सूट,
नीलाम मेरे घर का हर एक 'प्लेट' होगया।

देशमें केवल दलोंकी 'यील्ड' है,
इनसे बचनेकी न कोई 'शील्ड' है।

लड़ पड़े गांधीसे जिन्ना जोरसे,
और भारत एक 'बैटिल फील्ड' है।

तुम चाहती हो 'पौंड' यहां एकही 'पेंस' है,
मिल-मिलके बिगड़ जातीहो यह कौनसा सेंस है।

मिलना हो तो आओ, जो न मिलना हो तो कह दो
क्या यह भी कोई 'यूनिटी'-की 'कानफरेंस है।

कोई गोरा है कोई काला है,
भेद किसने यह लाके डाला है।

एकसा सबसे क्यों नहीं मिलते,
कैसी 'जसटिस' है, कौनसा 'ला' है।

उनके घर मेरी नहीं अब 'रीच' है,
'राइवलों' की रासतेमें कींच है।

जब बिगड़ती है वह मुझपर जोरसे,
मैं समझता हूँ 'बजट स्पीच' है।

रूस जापानमें मचैगा युद्ध,
खूब जूझेंगे अब लेनिन औ बुद्ध।

देखना है चपेटता है कौन,
राजवादी कि साम्यवादी शुद्ध।

मिलके आपसमें एक हो जाओ,
'लव' के चूल्हेमें 'बेक' हो जाओ।
देर यदि हो स्वराज मिलनेमें,
हिंदुओं झटसे शेख हो जाओ।

काश्तकारीका मजा है खेत जब जरखेज हो,
है मजा खानेका जब कांटा छुरी औ मेज हो।
कौनसी मुशकिल है दुनियांमें जो फिर आसां नहीं,
'फादर-इन-ला' आपका 'बेढब' अगर अंगरेज हो।

शेर

आज तक बनवा न पाया 'होल' घरके 'रूफ'–का,
कर्ज से लेकिन चुकाया दाम 'वाटर प्रूफ' का।

क्यों बनारसमें न अब तारीफ 'मिस्टर लिच' हो,
जब जमी सड़कोंपे 'बेढब' गर्द दो दो इंच हो।

नयी तालीमका 'बेढब' यही निकला नतीजा है,
चचा के सामने लेडी लिये लेटा भतीजा है।

हेल्थ चाहो बैठकरके टिनके 'टब'–में 'बाथ' लो,
नौकरी चाहो अगर एक मिसको अपने साथ लो।

लगा 'चेस्टर' पहनने ओढ़ने वाला रजाईका,
बनाता 'सैंडविच' है आज लड़का नानबाईका।

डिगरियां हैं पास बेढब फिर भी 'सरविस' दूर है,
बे पढ़ा मुझसे कहीं अच्छा है जो मज़दूर है।

इस कदर नकशा जमा खद्दरकी गांधी कैपका,
रंग बदला चाहता है इंडियाके 'मैप'–का।

जलाते हैं हमारे दिलको वह, कैसा यह नाटक है,
समझते हैं मेरा दिलभी कोई हनुमान फाटक है।

बीबीसे डर हो खिड़कीमें जाली लगाइये,
साहब को 'ब्रीज' करना हो डाली लगाइये।

हमारी प्रेमिकाकी देखने में उम्र छोटी है,
मगर लड़ती है ऐसे वह गोया कैरम को गोटी है।
मेरा दिल उनके 'रोजी' 'फेस' पर इस तरह लट्टू है,
कि जैसे इमतिहांमें नोट बुक पर कोई रट्टू है।
खाकभी जिस जमींकी पारस है,
शहर मशहूर यह बनारस है।
जिंदगीभर रह गये प्यासे तुम्हारी चाहपर,
हो भला अब भी कुछ देदो खुदाकी राहपर।
जहांपर सर्ज चलता है वहाँ पट्टू नहीं चलता,
मिसोंको चाहिये मोटर वहां टट्टू नहीं चलता।
अजब बेढब है नाज उनका यह शोखी भी निराली है,
नचाकर आंख कहते हैं यह कि 'राइफिल' दो नाली है।
वस्लकी भी रात कैसी रात है,
मै हूँ, बिस्तर है, व उनकी लात है।

*

कुछ आवश्यक टिप्पणियां

पृष्ठ १

ओविड लैटिन भाषाका महान कवि। उसकी एक पुस्तक है जिसका अर्थ है प्रेम करने की कला।

पृष्ठ २

पीरे मुगां – शराब पीनेवाले सिद्ध।

पृष्ठ ४

बाम—कोठा। जानबुल—अंग्रेज लोगोंके लिये जाति वाचक नाम अर्थात् अंग्रेज। पाम—बिना फल फूल के ताड़ ऐसे पेड़ जो आजकल गमलोंमें बंगलों में लगाये जाते हैं।

पृष्ठ ६

आदमज़ाद—मनुष्य। न्यूटन—एक अंग्रेज़ी वैज्ञानिक जिसने बहुत से आविष्कार किये थे जिसमें पृथ्वीकी आकर्षण शक्ति एक है। एडसन—एक अमेरिकन वैज्ञानिक, इसनेभी सैकड़ों आविष्कार किये ; जैसे ग्रामोफोन, बिजली के लट्टू इत्यादि।

पृष्ठ ७

केको-सूप-केक - एक प्रकारकी अंग्रेजी मिठाई। सूप—रसा, शोरबा।

पृष्ठ ६

खारे मुग़ीलां—बबूलका कांटा। रक्सां होंगे—नाचैंगे। हूर जन्नतमें मिलैंगी—मुसलमानोंका विश्वास है कि मृत्युके बाद स्वर्गमें सुन्दर स्त्रियां मिलैंगी ; उन्हीं स्त्रियों को हूर कहते हैं। मदरटंग—मातृभाषा। क्रेडिट—उधार।

पृष्ठ १०

जिस समय वाल्डविन साहबने इस्तीफा दिया था और रामजे मैकडानल्डने मजूरदलका शासन इङ्गलैंडमें प्रारम्भ किया था तब लिखा गया था।

पृष्ठ ११

पारकर—पारकर कलम।

पृष्ठ १४

बाब्ड बाल—गरदन तकके कटेहुए स्त्रियोंके बाल। होल्ड आल—कपड़ेकी वह खोली जिसमें बिस्तरा इत्यादि रखक बांध दिया जाता है रेल सफरके समय।

पृष्ठ १७

मिसमेयो—एक अमेरिकन स्त्री जिसमें 'मदर-इंडिया' नामकी एक पुस्तक भारतीयों को बदनाम करने के लिए लिखी

थी। उसमें भारतीयोंके संबंध में वाहियात और ऊटपटांग बातें लिखी हैं।

पृष्ठ १८

डारविन—अंग्रेज वैज्ञानिक जिसके सिद्धांतके अनुसार किसी समय मनुष्योंके पूर्वज बंदर थे।

पृष्ठ २२

कहगिल—फारसी शब्द है, भीतपर जो मिट्टी का गारा लगता है उसे कहगिल कहते हैं।

पृष्ठ ३५

वेनिस नगरकी सड़कें और गलियां पानी-पानी हैं। लोग एक स्थानसे दूसरेको नावोंपर जाते हैं। क्राइसैंथिमम—गुल दाऊदीका अंग्रेजीनाम।

पृष्ठ ३८

प्रोपोज—विवाहका प्रस्ताव।

पृष्ठ ४४

शरारा—चिनगारी।

पृष्ठ ४५

डायर—पंजाबको फ़ौजका एक जनरल जिसने सन् १९१९

जलियांवाला बाग़में गोलियां चलवायी थीं। आमलेट अंडेका बना हुआ एक खाद्य पदार्थ।

पृष्ठ ५०

अलस्टर...मे-अलस्टर आयरलैंडका एक प्रांत है। सारा आयरलैंड स्वतंत्र राज है मगर अलस्टरका प्रांत अलग है और इङ्गलैंडवालोंकी ओर है। उसका शासनभी अलग है। सहारा—दो अर्थोंमें प्रयुक्त हुआ है। एक अर्थ सहारा नामकी अफ्रीकाकी मरुभूमिभी है। स्विटजरलैंड—यूरोपमें सुहावना है। मंकीग्लैंड—डाक्टर वारनाफ़ बंदरोंकी गिलटी मनुष्यके शरीरके भीतर चीरा लगाकर रख देनेसे नया यौवन लाते हैं। यह प्रयोग कुछ अंश तक ही सफल हुआ है।

पृष्ठ ५१

बायरन—अंग्रेजी महाकवि। प्रेम विषयकी बहुत कविताकी हैं। विटेमिन—प्राणशक्ति ; जो कहा जाता है हरी वस्तुओंमें बहुत है। पोलसन—मक्खनका बड़ा व्यापारी।

पृष्ठ ५२

मंचूको-चीनका वह प्रांत जो जापानने ले लिया था। पहले इसका नाम मंचूरिया था। ग्रेटा गारबो—सुन्दर और विख्यात

सिनेमा अभिनेत्री। सोयाबीन—सेमके बीजके समान एकदाना जिसके बारेमें पहले बड़ी प्रशंसा थी कि इसके खानेसे बड़ी शक्ति बढ़ती है।

पृष्ठ ५६

पिंगपांग-एक अंग्रेजी खेल जो घरमें खेला जाता है।

पृष्ठ ५७

लायल – भक्त

पृष्ठ ५८

चाहकर - श्लेष

पृष्ठ ५९

सुरा का सार – अलकोहल

पृष्ठ ६३

चरचिल इगलैंड का प्रधान मंत्री

पृष्ठ ६४

कार्ड पर—राशन के युग में कपड़े कार्ड पर ही मिलते थे। बड़ी कठिनाई से।

पृष्ठ ६६

करफ्यू—जब दंगे होते थे तब करफ्यू की आज्ञा होती थी। कोई घर से बाहर नहीं निकल पाता था। यह अंग्रेजी शासन में बहुत होता था।

पृष्ठ ६८

तिलोचन—काशी की बाजार की विख्यात मंडी।

पृष्ठ ७०

वाइज—उपदेशक जो कहते हैं संसार के आनंद से मुख मोड़ लो।

पृष्ठ ८५

तूल—एक प्रकार का बढ़ियाँ ऊनी कपड़ा।

पृष्ठ ८७

फाइल सरकारी पत्रों का समूह।

सेण्टर केन्द्र।

प्लेन—मैदान। हिल—पहाड़।

साहिल—किनारा।

पृष्ठ ८६

ब्लाउज—स्त्रियों का कमोज।

शर्ट—कमीज।

पृष्ठ ६०

कामरेज—कामरेड का स्त्रीलिंग।

पृष्ठ ६२

कटिंग—कतरन।

पृष्ठ ६३

पास-बुक—बंक में हिसाब की कापी।

पृष्ठ ६५

गाना क्लासिकल—शास्त्रीय संगीत।

पृष्ठ ६६

वोल्टेज—बिजली की शक्ति।

लिपिस्टिक—अधरों को रंगने वाली वस्तु।

पृष्ठ ६७

एकशा, ओल्डटाम - दो प्रकारकी विलायती शराबें।

पृष्ठ ६८

माटा एक प्रकारका लाल चींटा।

पृष्ठ १००

खानए जंबूर—मक्खीका छाता।

पृष्ठ १०२

टेस्ट - रुचि।

पृष्ठ १०५

ट्रेमर - कंपन। सिसमोग्राफ़—वह यंत्र जिसमें भूकंप होने पर कंपन होने लगती है।

नाट—गांठ। यह उस समय सन् १६२४ में लिखा गया था जब पश्चिमोत्तर प्रदेश में मुसलमानों ने कोहाट में हिंदुओं की बस्ती की बस्ती जला दी थी।

पृष्ठ १०६

तीसरा चौपदा – बनारसी साड़ी का रुपक है।

पृष्ठ १०६

किटसन लम्प – गैस का हण्डा।

पृष्ठ १११

काशी का बुढ़वा मंगल मेला बड़ा विख्यात था। उसमें बहुत सी नावें एक साथ बाँध दी जाती थीं और उनकी सतह बराबर कर दी जाती थी और उसी पर नाच गाना होता था। उसी को नवपट्टैया कहते थे।

पृष्ठ ११२

लाट साहब से अर्थ लार्डलिनलिथगो से है जो सांड़ के प्रेमी थे।

पृष्ठ ११६

लिंच—सरकारी मनुसपलटी में बोर्ड के शासक थे। हनुमान फाटक—काशी का वह महल्ला जहाँ मुसलमानों ने दंगे में आग लगायी थी।